A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 21 दिसंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-111 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से रविचंद्रन अश्विन की निराश विदाई !

आशुतोष देशमुख

भारत के कप्तान रोहित शर्मा और अश्विन में एक समानता है। जो मन में है उसे बोलने में दोनों एक क्षण भी नहीं हिचकिचाते। ब्रिसबेन टेस्ट के अंतिम दिन ड्रॉ के बाद पत्रकार परिषद में अश्विन ने रोहित की उपस्थिति में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से बिदाई की घोषणा की। दिलचस्प यह है कि रोहित ने अपने पहले ही क्रिकेट मैच में जो शतक जमाया था, तब नॉन-स्ट्राइकिंग छोर पर अश्विन ही थे। ब्रिसबेन में हालाँकि अश्विन ने पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए, लेकिन रोहित ने बग़ैर संकोच के कहा कि 106 मैचों में 537 विकेट लेने वाले अश्विन को ऑस्ट्रेलिया दौरे की शुरुआत से ही यह लगने लगा था कि अब भारतीय टीम को उनकी ज़रूरत नहीं है। खुद्दार अश्विन ने यही बेहतर समझा कि बजाय टीम के साथ लटके रहने के, टीम को और क्रिकेट को अलविदा कह दें। वह उन्होंने कर दिया।

एक समय था, विश्व क्रिकेट में भारत की स्पिन चौकड़ी की धाक थी। एक स्तरीय तेज गेंदबाज़ के अभाव में हालत यह भी थी कि पाँचवें- छठे ओवर में ही स्पिन गेंदबाज़ को बुलाना पड़ता था। उस चौकड़ी में दक्षिण के दो ऑफ़ स्पिन गेंदबाज़ प्रसन्ना और वेंकट राघवन सम्मिलित थे। प्रसन्ना एक आक्रामक, सामान्य से ज़्यादा उछाल दे कर बल्लेबाज़ को ललचा कर अपने जाल में फँसाने वाले तो वेंकट अचूक गेंदबाज़ी, असीमित धैर्य और समय आने पर बल्लेबाज़ी भी करने वाले। रविचंद्रन अश्विन ऑफ़ स्पिन गेंदबाज़ी में प्रसन्ना और वेंकट राघवन का आदर्श मिश्रण रहे। अपने खेल जीवन में भारतीय क्रिकेट में अश्विन का योगदान कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा है। सीमित ओवरों के क्रिकेट में, 2011 विश्व कप और 2013 चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली टीमों का हिस्सा होना उनके कॅरियर का मुख्य आकर्षण रहा है। लेकिन ये तो हुई आँकड़ों की बात। इसके परे देखें तो अश्विन के रूप में भारतीय क्रिकेट से एक ऐसे क्रिकेटर ने विदाई ली है जो क्रिकेट का खेल भी पूरे धैर्य के साथ शतरंज की तरह खेलता था। ऐसे अथाह क़िस्से हैं जो उन्हें अन्य गेंदबाज़ों से अलग करते हैं। शतरंज के माहिर खिलाड़ी अश्विन कहते हैं, 'मेरी क्रिकेट में सफलता का श्रेय मेरे शतरंज ज्ञान को भी है। मैंने शतरंज से ही सीखा कि अंतिम जीत के लिए प्रारम्भ में कुछ मोहरे (फ़ील्डर) खोने में कुछ भी ग़लत नहीं।' 2016 के आईपीएल में अश्विन ने ए बी डिविलियर्स को ऐसे ही फँसाया। मिड विकेट को हटा कर धीमी और वाइड गेंदें डाल कर डिविलियर्स को ललचाया कि वो हवा में गेंद खेंले। कुछ चौके लगे भी। लेकिन अचानक एक धीमी गेंद के मोह में डिविलियर्स ने छक्का मारने की कोशिश की लेकिन पकड़े गए। डेविड वार्नर, ऐलिस्टर कुक और बेन स्टोक्स तो उनके ख़ास मुर्ग़े थे।

अश्विन का क्रिकेट केवल गेंदबाज़ी के हुनर का क्रिकेट नहीं था। वो खिलाड़ी के मन मस्तिष्क में भी छेड़छाड़ करते थे। आईपीएल के ही एक मैच में जब पोलार्ड अश्विन के सामने आए तो उन्होंने पोलार्ड को बस इतना कहा कि मैंने आपकी कमजोरी पकड़ ली है और उसी के अनुसार बॉलिंग करूँगा। बस! पोलार्ड अपना खेल भूलकर अतिरिक्त सावधानी के साथ खेलने लगे और आउट हो गए। जब वो लौट रहे थे, अश्विन ने कहा मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। डेविड वॉर्नर भी अश्विन को भूल नहीं सकते। 2017 के बंगलुरु टेस्ट में अश्विन ने उन्हें लगातार ऑफ़ स्पिन आक्रमण कर व्यस्त रखा और फिर उसी एक्शन और उसी लेंथ के साथ अचानक एक आर्मर गेंद फेंकी जो ठीक विपरीत दिशा में स्पिन हुई। बल्लेबाज़ की सोच के आगे जा कर सोचना अश्विन की विशेषता रही है।

अश्विन के क्रिकेट का मूल्यांकन करते समय एक बात हमेशा भुला दी जाती है, वो है उनकी बल्लेबाज़ी। टेस्ट क्रिकेट में 537 विकेट लेने वाले रविचंद्रन को भारतीय क्रिकेट उनकी बल्लेबाज़ी के लिए भी भूल नहीं सकता। 106 टेस्ट मैच में उन्होंने 3509 रन बनाए जिसमें 6 शतक और 14 अर्ध शतक भी है। अश्विन की जिस पारी को मैं भारतीय क्रिकेट की सर्वोत्तम पारियों में निस्संकोच शामिल करूँगा वो सन 2013 में कोलकाता के ईडन गार्डन पर वेस्ट इंडीज़ के विरुद्ध खेली उनकी 124 रन की पारी है। अश्विन की पारी देखने योग्य थी। न केवल उन्होंने अपना विकेट बचाकर रखा, वरन समय समय पर हाथ खोलकर (11 चौके) बिंदास बल्लेबाज़ी भी की। आज अश्विन के क्रिकेट जीवन की उस बात की भी चर्चा की जानी चाहिए जिसके कारण वो विश्व क्रिकेट में वो विवादों में रहे हैं। यह विवाद है माँकडिंग का। माँकडिंग, कहते हैं जब एक गेंदबाज नॉन-स्ट्राइकिंग बल्लेबाज को रन आउट कर देता है। मतलब गेंदबाज द्वारा गेंद छोड़ने से पहले ही जब नॉन-स्ट्राइकिंग बल्लेबाज क्रीज छोड़ देता है तो गेंदबाज़ गेंद डालने के पहले ही स्टम्प्स उड़ाकर बल्लेबाज़ को रन आउट कर देता है। यह नाम महान भारतीय ऑलराउंडर वीनू मांकड़ से लिया गया है, जिन्होंने 1947 में सिडनी टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के बिल ब्राउन को इसी अंदाज में रन आउट किया था।

हालांकि क्रिकेट के नियम गेंदबाजों को बल्लेबाज को रन आउट करने की इजाजत देते हैं, लेकिन क्रिकेट का अभिजात्य विश्व इसे खेल की भावना के खिलाफ मानता है। अश्विन को विश्व क्रिकेट में इसी बात के लिए विलेन माना जाता रहा है। अश्विन ने कई बार इस नियम का उपयोग किया और हर बार विवादों में फँसे। श्रीलंका के विरुद्ध अश्विन ने 2012 के एकदिवसीय मैच में खुद को मांकडिंग की स्थिति में पाया था जब उन्होंने लाहिरू थिरमाने को मांकडिंग किया। उस समय थिरमाने 44 पर खेल रहे थे। पहले तो अम्पायर को लगा शायद अश्विन अपील को लेकर गम्भीर नहीं हैं। लेकिन जब अश्विन अड़े रहे तो अम्पायर ने पहले कैप्टन वीरेन्द्र सहवाग को बुलाया और समझाया कि यह भले ही नियम में हो लेकिन क्रिकेट की स्पिरिट के ख़िलाफ़ है। इसमें दो मत नहीं कि अश्विन को भारतीय क्रिकेट में वो इज्जत नहीं मिली, जिसके वो हक़दार थे। आख़िर किस गेंदबाज़ ने एक दिवसीय मुक़ाबले में एक ओवर में बग़ैर एक रन दिए 4 बल्लेबाज़ों को आउट किया। इसीलिए अश्विन के मन में शायद हमेशा एक तरह की कुंठा रही। उन्हें 'अच्छा' तो माना गया लेकिन 'सर्वश्रेष्ठ' नहीं। इसीलिए 2021 के इंग्लैंड दौरे पर जब रवि शास्त्री ने अश्विन से लाइव प्रसारण में पूछा कि उन्होंने बेन स्टोक्स और जो रूट जैसे धुरंधर बल्लेबाज़ों को कैसे आउट किया तो अश्विन का जवाब था, 'कुछ नहीं सर, विकेट और फ़ील्डर्स ने सहयोग दिया'। सवाल यही है कि इस क्रिकेटिंग जिनीयस के ज्ञान का उपयोग भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड करता है या नहीं?

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

कुछ लोग सोचते हैं 'मंदिर-मस्जिद' चिल्लाकर हिंदुओं के नेता बन जाएंगे

भागवत बोले-हर दिन मंदिर-मस्जिद विवाद उठाया जा रहा, ये सही नहीं

पुणे (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने गुरुवार को मंदिर-मस्जिद विवादों के फिर से उठने पर चिंता जताई। भागवत ने कहा कि अयोध्या के राम मंदिर के निर्माण के बाद कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि वे ऐसे मुद्दे उठाकर हिंदुओं के नेता बन जाएंगे। इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। भागवत बोले- भारत को यह दिखाने की जरूरत है कि हम एक साथ रह सकते हैं।

हम लंबे समय से सद्भावना के साथ रह रहे हैं। अगर हम दुनिया को यह सद्भावना देना चाहते हैं, तो हमें इसका एक मॉडल बनाने की जरूरत है। भागवत ने किसी का नाम लिए बिना कहा- ये स्वीकार नहीं पुणे में सहजीवन व्याख्यानमाला में भारत विश्वगुरु पर व्याख्यान देते हुए भागवत ने ये बातें कहीं। उन्होंने किसी विशेष स्थान का नाम लिए बिना कहा, हर दिन एक नया मामला (विवाद) उठाया जा रहा है। इसकी अनुमति कैसे

दी जा सकती है। हाल के दिनों में मंदिरों का पता लगाने के लिए मस्जिदों के सर्वेक्षण की कई मांगें अदालतों में पहुंची हैं। हालांकि, भागवत ने अपने व्याख्यान में किसी का नाम नहीं लिया।

संघ प्रमुख ने कहा-

अब देश संविधान के अनुसार चलता है– भागवत ने आगे कहा– बाहर से आए कुछ समूह अपने साथ कट्टरता लेकर आए हैं और वे चाहते हैं कि उनका पुराना शासन वापस आए, लेकिन अब देश संविधान के अनुसार चलता है। इस व्यवस्था में लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं, जो सरकार चलाते हैं। राम मंदिर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह तय किया गया था कि अयोध्या में राम मंदिर हिंदुओं को दिया जाना चाहिए, लेकिन अंग्रेजों ने इसे भांप लिया और दोनों समुदायों के बीच दरार पैदा कर दी। तब से अलगाववाद की यह भावना अस्तित्व में आई। परिणामस्वरूप, पाकिस्तान अस्तित्व में आया। भागवत बोले– दूसरे देशों में अल्पसंख्यकों के साथ क्या हो रहा, सब देख रहे मोहन भागवत ने यह भी कहा कि भारत में अक्सर अल्पसंख्यकों की स्थिति को लेकर चर्चा की जाती है।

नदी जोड़ो परियोजनाएं प्रदेश में विकास की लिखेगी नयी इबारत: मुख्यमंत्री

***इंदौर को हर क्षेत्र में बनाया जायेगा नम्बर–वन**
***इंदौर में होगी आईटी समिट, नेहरू स्टेडियम का होगा पुनर्निर्माण**
***नगर निगम का बनेगा नया भव्य भवन**
***मुख्यमंत्री ने इंदौर को दी 1249 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात**

भोपाल /इंदौर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि इंदौर, माँ देवी अहिल्या की नगरी है, जो विकास का पर्याय रहीं है। उनके कार्यकाल में देव स्थानों का पूरे देश में अद्भुत विकास हुआ है। इंदौर वर्तमान में देश का सबसे स्वच्छ शहर है। यह आईटी, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्मार्ट सिटी के कार्यों आदि में देश में भी अव्वल है। अब इंदौर को हर क्षेत्र में अव्वल बनाने के कार्य तेजी से होंगे। इंदौर का संर्वागीण विकास कर इंदौर को देश के प्रमुख महानगरों के समकक्ष खड़ा किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इंदौर के नेहरू स्टेडियम का पुनर्निर्माण किया जायेगा। यहाँ आईटी के विकास की अपार संभावनाएं है, इसको देखते हुए इंदौर में जल्द ही आईटी समिट आयोजित की जायेगी। इंदौर नगर निगम का नया भव्य भवन भी बनाया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को इंदौर में जनकल्याण पर्व के तहत आयोजित लोकार्पण एवं भूमि-पूजन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इंदौर के लिये 1249 करोड़ रूपये से अधिक की लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण-भूमिपूजन किया।

सुप्रभात

एक इच्छा लड़की की चूड़ियों में चलती है
पहले वह टूटें उसके बिस्तर पर
फिर टूटें उसकी चौखट पर
लेकिन चौखट पर क्यों?
क्योंकि लड़की के भीतर एक शोकमयी
औरत है
और जो विधवा है
है नहीं लेकिन
हो जाएगी जो
लड़की का डर उसकी धमनियों से काँपता
चूड़ियों तक चलता है
काँपती है उनमें लड़की की इच्छा
काँपता है उनमें लड़की का शोक
शोक?
आदमी कहाँ है लड़की का?
आदमी जिसका मातम उसकी धमनियों में है
और इच्छा जिसकी उसकी चूड़ियों में
आदमी उसका फँसा है
किसी दूसरी देह में
किसी दूसरे सपने में,
दूसरे दुख, दूसरे आँसू में
उसका हर दुख, सपना, आँसू
लड़की की मातमी पकड़ से परे है...

लेकिन लड़की तो लड़की है
उसमें वही आदिम भोलापन
पागलपन, मरनपन भरा है
जिसकी सज़ा
किसी आने वाले कल
वह उस आदमी को देगी
जब तोड़ेगी अपनी चूड़ियाँ...

– गगन गिल

हरियाणा के पूर्व सीएम ओपी चौटाला का निधन

गुरुग्राम (एजेंसी)। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं इनेलो सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला का निधन हो गया है। वे 89 साल के थे। शुक्रवार को वे गुरुग्राम में अपने घर पर थे। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। जिसके बाद साढ़े 11 बजे उन्हें गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में लाया गया। करीब आधे घंटे बाद दोपहर 12 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। इसका पता चलते ही उनके बड़े बेटे अजय और पोते पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला अस्पताल में पहुंचे। वहीं अस्पताल के बाहर उनके समर्थकों की भीड़ जुटनी शुरू हो गई है। उधर, सिरसा के गांव तेजा खेड़ा में उनके फार्म हाउस पर सन्नाटा छाया हुआ है। यहां पर कल दोपहर 3 बजे उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

200 मीटर का इलाका बना आग का गोला, हर ओर मचा हाहाकार

● राजस्थान के जयपुर में एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट, 11 जिंदा जले

40 गाड़ियों में लगी आग, 33 से ज्यादा झुलसे, उड़ते पक्षी जले

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में शुक्रवार सुबह अजमेर हाईवे पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के सामने एलपीजी गैस से भरे टैंकर में धमाका हो गया। हादसे में 11 लोग जिंदा जल गए और 33 लोग झुलस गए हैं।

गैस टैंकर को एक ट्रक ने टक्कर मारी थी। इससे टैंकर से गैस का रिसाव हुआ, जो 200 मीटर तक फैल गई, जिसने अचानक आग पकड़ ली। धीरे-धीरे एक किलोमीटर तक यह आग फैल गई। जानकारी के अनुसार टैंकर सुबह करीब अजमेर से जयपुर की ओर आ रहा था। सुबह करीब 5.44 मिनट पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के सामने से वह वापस अजमेर की ओर यू-टर्न ले रहा था। इसी दौरान जयपुर से आ रहा ट्रक टैंकर से भिड़ गया। इसके साथ ही पूरा इलाका आग का गोला बन गया।

भोपाल के जंगल में 11 करोड कैश, 52 किलो सोना मिला

आयकर–पुलिस को थी खुफिया जानकारी, आईटी टीम रात 2 बजे पहुंची, 2 दिन में 51 ठिकानों पर छापे

भोपाल (नप्र)। आयकर विभाग को भोपाल के मेंडोरी के जंगल में गुरुवार देर रात एक कार से 52 किलो सोना मिला। इसके अलावा, 11 करोड़ रुपए कैश भी बरामद हुए हैं। सोने की कीमत करीब 40 करोड़ 47 लाख रुपए आंकी गई है। अभी ये स्पष्ट नहीं है कि ये सोना और कैश किसका है। आयकर विभाग (आईटी) को यह बड़ी कामयाबी मध्यप्रदेश में रियल एस्टेट कारोबारियों पर रेड के बीच मिली है। आयकर विभाग ने दो दिन में भोपाल और इंदौर में 51 ठिकानों पर छापेमारी की है। अब यह पता लगाया जा रहा है कि सोना और कैश का कनेक्शन बिल्डर्स और आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा के यहां चल रही

कार्रवाई से तो नहीं है। जिस कार से सोना और कैश मिला है वह चेतन गौर नाम के व्यक्ति की बताई जा रही है।

आयकर के साथ पुलिस को भी मिली थी खुफिया जानकारी– आयकर विभाग के सूत्रों के मुताबिक, एक खुफिया जानकारी मिली थी कि जंगल में एक कार में कैश है, जिसे कहीं ले जाया जा रहा है। इसके बाद टीम गुरुवार की रात करीब दो बजे मेंडोरी पहुंची। जंगल में इनोवा कार के पास पहले से करीब 100 पुलिसकर्मी और 30 गाड़ियां थीं। संभवत- पुलिस को भी इसके बारे में सूचना मिली होगी। आयकर की टीम ने कार की सर्चिंग की तो नकदी के साथ सोना भी मिला।

सौरभ शर्मा का दोस्त है कार मालिक चेतन गौर

आयकर विभाग की जांच में खुलासा हुआ है कि मेंडोरी में विनय असवानी के मकान के बाहर लावारिस हालत में जो इनोवा कार मिली है वह चेतन गौर की है। चेतन लोकायुक्त पुलिस के छापे की जद में आए सौरभ शर्मा का दोस्त है। बताया जा रहा है कि जब आयकर विभाग के अफसरों ने चेतन गौर से इस मामले में पूछताछ की तो उसने कहा कि सोना और पैसा कहां से आया और किसका है, इसकी उसे जानकारी नहीं है। उसने ये जरूर माना कि वह आरटीओ के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा का दोस्त है। टीम अब इस आधार पर आगे की जांच करेगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 21 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हिंदू विवाह पवित्र रिश्ता है कोई 'व्यापारिक सौदा' नहीं

- सुप्रीम कोर्ट बोला-पति से 'पैसे ऐंठने' के औजार नहीं हैं यह कानून
- महिलाओं के कल्याण के लिए बने कानूनों के दुरुपयोग पर जताई चिंता

नई दिल्ली (एजेंसी)। महिलाओं को उत्पीड़न से बचाने वाले कानूनों के दुरुपयोग को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर बड़ी टिप्पणी की है। शीर्ष अदालत ने कहा है कि महिलाओं के कल्याण के लिए बने सख्त कानून पतियों को 'सजा देने, धमकाने, दबाने या उनसे पैसे ऐंठने' के लिए नहीं हैं। जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस पंकज मित्तल ने कहा कि हिंदू विवाह एक पवित्र बंधन है, परिवार की नींव है, कोई 'व्यापारिक सौदा' नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने ये टिप्पणी एक वैवाहिक विवाद का निपटारा करते हुए की। शीर्ष अदालत ने तलाक को मंजूरी देते हुए पत्नी की तरफ से पति के खिलाफ दर्ज कराए गए सभी आपराधिक मामलों को भी रद्द कर दिया। यह मामला एक अलग हुए दंपति के बीच तलाक का था, जिसमें पति को पत्नी को 12

करोड़ रुपये का स्थायी गुजारा देने का आदेश दिया गया। कोर्ट ने उन मामलों पर चिंता जताई जहां पत्नी और उसका परिवार पति और उसके परिवार से पैसे ऐंठने के लिए आपराधिक शिकायतों का इस्तेमाल करते हैं। शीर्ष अदालत ने कहा कि पुलिस कभी-कभी जल्दबाजी में कार्रवाई करती है और पति या उसके रिश्तेदारों को गिरफ्तार कर लेती है। ऐसे मामलों में जमानत मिलना भी मुश्किल होता है। कोर्ट ने कहा कि पत्नियों को ध्यान रखना चाहिए कि ये कानून उनकी भलाई के लिए हैं, न कि पतियों को परेशान करने के लिए।

संक्षिप्त समाचार

संभल में सांसद जिया उर रहमान के घर चला बुलडोजर

बिजली चोरी के केस के बाद नई मुसीबत में फंसे एसपी नेता

संभल (एजेंसी)। संभल में सपा सांसद जिया उर रहमान बर्क के घर पर बुलडोजर की कार्रवाई हुई है। प्रशासन ने घर के बाहर नाली के ऊपर बनी सीढ़ियों को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया। हाल ही में उनके खिलाफ बिजली चोरी के आरोप में केस भी दर्ज हुआ है। शुक्रवार को दीपा सराय स्थित समाजवादी पार्टी से सासंद जियाउर्रहमान बर्क के घर के बाहर नगर पालिका के बुलडोजर ने दस्तक दी। यहां सासंद के घर के बाहर बनी सीढ़ियों पर बुलडोजर कार्रवाई की गई। यहां

बुलडोजर ने तोडफोड की वहीं अवैध निर्माण के आरोप में जिला प्रशासन की तरफ से पहले ही उन्हें नोटिस थमाया जा चुका है। इस पर सासंद के वकील की तरफ से एक माह के समय की मांग की गई थी। इसी दौरान अतिक्रमण हटाओ अभियान को लेकर सासंद की सीढियां ध्वस्त कर दी गई। इस तरह, जहां एक तरफ आज जुमे की नमाज की तैयारी चल रही थी वहीं दूसरी तरफ बुलडोजर एक्शन जारी है। संभल पिछले कई दिनों से चर्चा में है। पहले जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा को लेकर यह सुर्खियों में रहा। इसके बाद सपा सांसद जिया उर रहमान बर्क के घर बिजली चोरी के आरोप लगे।

दाल में कुछ काला है या सब कुछ ही काला है

बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले पर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख टिप्पणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को सुनवाई हुई। कोर्ट ने बंगाल सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि जब राज्य सरकार को सिलेक्शन में गड़बड़ी का पता चल चुका था, तो शिक्षकों की अतिरिक्त पद पर नियुक्ति क्यों की गई। सीजेआई संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने बंगाल

सरकार से पूछा-अतिरिक्त पद बनाने का उद्देश्य क्या था। गड़बड़ी का पता लगने के बावजूद आपने दागी उम्मीदवारों को बाहर क्यों नहीं किया। दाल में कुछ काला है या सब कुछ काला है। दरअसल, 2016 में पश्चिम बंगाल के स्कूल सेवा आयोग में शिक्षकों की भर्ती में गड़बड़ी के आरोप लगे थे। कलकत्ता हाईकोर्ट ने 22 अप्रैल को राज्य सरकार और सहायता प्राप्त स्कूलों में 25,753 शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति रद्द कर दी थी। इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में कई याचिकाएं लगाई गई थीं। सुप्रीम कोर्ट ने 29 अप्रैल को हटाए गए शिक्षकों के खिलाफ सीबीआई जांच से रोक लगा दी थी।

महाकुंभ जाने वालों को स्पाइसजेट ने दी खुशखबरी

प्रयागराज जाने के लिए स्पेशल फ्लाइट्स का किया ऐलान

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ की तैयारियां जोरों पर हैं। इसी बीच स्पाइसजेट एयरलाइन्स ने भी भक्तों के लिए खुशखबरी दी है। खबर है कि कंपनी ने प्रयागराज के लिए विशेष फ्लाइट्स का ऐलान किया है, जो रोज उड़ान भरेंगी। महाकुंभ की शुरुआत 13 जनवरी 2025 से होने जा रही है। स्पाइसजेट एयरलाइन्स ने जानकारी दी है कि खास महाकुंभ के लिए दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और अहमदाबाद से प्रयागराज तक स्पेशल फ्लाइट्स शुरू

की जा रही हैं।

ये उड़ानें 12 जनवरी से शुरू होकर 28 फरवरी 2025 तक संचालित होंगी। इनके चलते लाखों तीर्थयात्रियों को लाभ मिलने के आसार हैं। कंपनी ने कहा कि सिर्फ स्पाइसजेट ही अहमदाबाद से प्रयागराज तक नॉन स्टॉप फ्लाइट्स संचालित कर रही है। कंपनी के चीफ बिजनेस ऑफीसर देबोजो महर्षि ने कहा, महाकुंभ मेला सिर्फ धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि आस्था, भक्ति और एकता का प्रतीक है। स्पाइसजेट में हम इस अविश्वसनीय यात्रा के लिए आसान कनेक्टिविटी और सुविधानजक यात्रा प्रदान कर गर्व महसूस कर रहे हैं। चार बड़े शहरों से प्रयागराज तक स्पेशल डेली फ्लाइट्स के जरिए हमारा मकसद यह सुनिश्चित करना है कि देशभर से श्रद्धालु यात्रा की चिंता के बगैर इस पवित्र आयोजन में शामिल हो सकें।

पंडित प्रदीप मिश्रा की कथा में मची भगदड़

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ में पंडित प्रदीप मिश्रा की कथा में शुक्रवार दोपहर भगदड़ मच गई। कई महिलाएं और बुजुर्ग गिरकर चोटिल हो गए। दोपहर 1 बजे से कथा शुरू हो चुकी थी। करीब 1 लाख लोग पहुंचे थे। कथा शुरू होने पर लोग जल्दबाजी में अंदर जा रहे थे। बाउंसर्स ने भीड़ अचानक बढ़ने पर लोगों को रोक-रोक कर एंट्री करानी शुरू कर दी फिर भगदड़ मच गई। चोटिल महिलाओं और बुजुर्गों का घटनास्थल पर बने हेल्थ कैंप में इलाज किया जा रहा है। शताब्दी नगर में चल रही इस कथा का आज छठा और कल आखिरी दिन है। रोज करीब डेढ़ लाख लोग आ रहे हैं। कई वीआईपी भी कथा में शामिल हो चुके हैं।

प्रदेश में विकास को दर्शाता म्यूचुअल फंड सेक्टर में सवा लाख करोड़ रूपये का निवेश :मुख्यमंत्री

प्रदेश में सोलर ऊर्जा के माध्यम से किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के विशेष प्रयास किये जा रहे

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश तेज गति से आगे बढ़ रहा है। विभिन्न सेक्टरों के साथ म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री भी तेजी से आगे बढी है। म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में निवेश 10 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 68 लाख करोड़ रूपये से अधिक हो गया है। प्रदेश में म्यूचुअल फंड में सवा लाख करोड़ रुपये का निवेश है, जो यहां हुए विकास को दर्शाता है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में आयोजित म्युचुअल फंडडिस्ट्रीब्यूटर्स के 2 दिवसीय निवेश मंत्रणा कार्यक्रम में ये बातें कहीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उन्होंने कहा प्रदेश सरकार का बजट सवा तीन लाख करोड़ रुपये है जिसे बढ़ाकर 7 लाख करोड रुपये ले जाने के बड़े लक्ष्य के साथ प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। हम अनावश्यक खर्चों को कम करके आय में वृद्धि करने पर जोर देते हुए कार्य कर रहे है। देश और प्रदेश हर क्षेत्र में बड़े लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है। बदलते दौर में व्यवस्थाएं क्रांतिकारी रूप से परिवर्तित हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा बिजली उत्पादन के क्षेत्र में किसानों को सौर ऊर्जा पंप के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रदेश में विशेष प्रयास किये जा रहे है। इस योजना के क्रियान्वयन से प्रदेश सरकार की बिजली पर खर्च होने वाली बडी राशि की बचत होगी। उन्होंने कहा प्रदेश में 2003 में 5 मेडिकल कालेज थे। वर्तमान में 30 मेडिकल कॉलेज है, जिसमें 5 हजार सीटे है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा आने वाले समय में प्रदेश में 52 मेडिकल कॉलेज स्थापित करने के लक्ष्य के साथ कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा नदी जोड़ो अभियान में प्रदेश में 2 नदी जोड़ो अभियान पर विशेष रूप से कार्य किया जा रहा है। इन योजनाओं से प्रदेश में वर्तमान सिंचाई का रकबा 45 लाख हेक्टेयर से बढ़कर एक करोड़ हेक्टेयर हो जाएगा। इससे प्रदेश में सिंचाई के साथ-साथ उद्योगों को भी लाभ मिलेगा। प्रदेश में सिंचाई क्षेत्र बढ़ने से विकास के साथ-साथ रोजगार बढ़ेंगे। उन्होंने कहा म्यूचुअल फंड निवेश मंत्रणा कार्यक्रम में होने वाले मंथन के माध्यम से भविष्य के अच्छे सोपान निकल कर आएंगे।

कार्यक्रम में प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक श्री गोलू शुक्ला, श्री गौरव रणदिवे, म्युचुअल फंड एसोसिएशन के सेंट्रल इंडिया अध्यक्ष राजेश कूलवाल, श्री अभिलाष जैन, श्री अमित माहेश्वरी, श्री प्रमोद सराफ सहित देश भर के बड़ी संख्या में म्युचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर उपस्थित थे।

ब्रिक्स को लेकर जयशंकर ने ठीक कहा था, हम किसी के खिलाफ नहीं

मॉस्को (एजेंसी)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को साल 2024 के आखिरी संबोधन में 3 घंटे 17 मिनट तक जनता के सवालों के जवाब दिए। इसमें उनसे यूक्रेन जंग के अलावा, ब्रिक्स, सीरिया,

इकोनॉमी, महंगाई जैसे मुद्दों पर सवाल पूछे गए थे। ब्रिक्स को लेकर पूछे गए एक सवाल पर उन्होंने एस जयशंकर का नाम लिया। पुतिन ने कहा कि ब्रिक्स किसी के खिलाफ काम नहीं कर रहा है। हम सिर्फ अपनी भलाई और संगठन के हित के लिए काम करते हैं। हम हम किसी भी तरह का एजेंडा नहीं चला रहे हैं। भारत और विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इसे सबसे अच्छे तरीके से कहा था कि ब्रिक्स पश्चिमी विरोधी नहीं है। बस इसमें पश्चिम (देश) शामिल नहीं।

भारी विवाद के बीच संसद का शीतकालीन सत्र खत्म

- कुल 20 बैठकें हुईं, मात्र 105 घंटे ही चली कार्यवाही
- अडाणी-मणिपुर और अंबेडकर के मुद्दे पर हुआ हंगामा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 18वीं लोकसभा का शीतकालीन सत्र शुक्रवार को समाप्त हो गया। यह सत्र 25 नवंबर से शुरू हुआ था। पूरे सत्र में कुल 20 बैठकें हुईं। दोनों सदन (लोकसभा और राज्यसभा) में लगभग 105 घंटे कार्यवाही चली। सत्र के दौरान लोकसभा की प्रोडक्टिविटी 54 फीसदी, राज्यसभा में 41 फीसदी रही। सदन में कुल चार बिल पेश किए गए। हालांकि, कोई पारित नहीं हो सका। सबसे चर्चित एक देश, एक चुनाव के लिए पेश हुआ 129 वें संविधान (संशोधन) बिल रहा। इस बिल को समीक्षा के लिए 39 सदस्यीय जॉइंट पार्लियामेंट्री कमेटी के पास भेजा गया। कमेटी में

लोकसभा से 27 और राज्यसभा से 12 सांसदों को चुना गया है। कमेटी को संसद के अगले सत्र के अंतिम सप्ताह के पहले दिन लोकसभा में रिपोर्ट देनी होगी। सत्र की शुरुआत अडाणी मुद्दे पर हंगामे से हुई। फिर विपक्षी सांसदों ने मणिपुर और किसानों का मुद्दा भी उठाया। सत्र खत्म होते-होते अंबेडकर मुद्दे पर जमकर हंगामा हुआ।

सनातन ने सबको दी शरण, फिर भी मंदिरों को बनाया गया निशाना

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में आयोजित कार्यक्रम में सीएम योगी आदित्यनाथ ने संभल मुद्दे पर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि हर काल में हिंदू मंदिरों पर हमला किया गया। हर समय हिंदू मंदिरों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई। सनातन ने सबको शरण दी। इसके बावजूद यह धर्म हर किसी के निशाने पर रहा। उन्होंने कहा कि अयोध्या, संभल और भोजपुर में मंदिर तोड़े गए। सीएम योगी अयोध्या धाम में आयोजित अष्टोत्तरशत 108 श्रीमद्भागवत पाठ, पंच नारायण महायज्ञ कार्यक्रम में भाग लेने के बाद संबोधन में अपनी बात रखी। दरअसल, पिछले दिनों संभल और भोजपुर का मामला खासा गरमाया रहा है। संभल में शाही जामा मस्जिद सर्वे के दौरान 24 नवंबर को हिंसा भड़की थी। इसमें पांच लोग मारे गए। इसके बाद योगी सरकार ने कड़ा ऐक्शन लिया है। लगातार वहां प्रशासनिक कार्रवाई जारी है। बुलडोजर एक्शन से लेकर बिजली चोरी तक के मामले की जांच चल रही है। इस बीच अयोध्या में आयोजित कार्यक्रम में सीएम योगी आदित्यनाथ ने यह बड़ा बयान देकर एक नई बहस शुरू कर दी है।

सीएम योगी बोले-

अयोध्या, संभल और भोजपुर में तोड़े गए मंदिर

सीएम योगी ने कहा, हर समय हिंदू मंदिरों पर आघात

प्रियंका की बैग पॉलिटिक्स में अब 1984 की एंट्री

बीजेपी सांसद अपराजिता सारंगी ने प्रियंका को गिफ्ट में दिया बैग

- इसमें 'खून से 1984' लिखा हुआ था, सिख दंगों की ओर इशारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस बार के संसद सत्र में अपने बैग्स को लेकर चर्चा में रहीं सांसद प्रियंका गांधी के साथ एक अजीब वाक्या हुआ। संसद परिसर के अंदर उन्हें बीजेपी सांसद अपराजिता सारंगी ने एक बैग गिफ्ट किया जिसमें 1984 लिखा हुआ था।

अपराजिता सारंगी ने बताया कि पहले तो उन्होंने इस बैग को लेने में हिचकिचाहट दिखाई, लेकिन बाद में उन्होंने ले लिया और अपने पास छुपा लिया। बता दें कि साल 1984 में कांग्रेस के ही राज में सिख दंगे हुए थे,जिसे लेकर अक्सर बीजेपी उसे कटघरे में खड़ी करती रहती है। आज संसद सत्र का आखिरी दिन था।

सभी सांसदों की तरह वायनाड सांसद प्रियंका गांधी भी संसद परिसर के अंदर थीं। जैसे ही वह संसद के गलियारे में पहुंचीं, पीछे से भुवनेश्वर सीट से बीजेपी सांसद अपराजिता सारंगी पहुंचीं। उन्होंने आगे चल रहीं प्रियंका को एक बैग थमाया। उस बैग में खून से 1984 लिखा हुआ था। पहले तो प्रियंका इसे लेने में हिचकिचाईं, फिर इसे लेकर छिपा लिया।

कवि और कविता' में चित्रा सिंह पर एकाग्र आयोजन कल

भोपाल। चर्चित कवि एवं प्रोफेसर चित्रा सिंह की कविताओं पर एकाग्र 'कवि और कविता' का आयोजन आब-ओ-हवा एवं स्पंदन, भोपाल के तत्वावधान में 22 दिसंबर को किया जा रहा है। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, नगर परिसर के सभाकक्ष में होने वाले इस आयोजन की अध्यक्षता पूर्व पुलिस महानिदेशक सुश्री अनुराधा शंकर करेंगी।

आब-ओ-हवा के संपादक भवेश दिलशाद ने बताय कि 'धूप के नन्हे पाँव' काव्य संग्रह की चर्चा प्रसिद्ध रंगकर्मी कवि हेमंत देवलेकर करेंगे जबकि कवि एवं संपादक ब्रज श्रीवास्तव और समालोचक सुमन सिंह कविताओं के संदर्भ में चित्रा सिंह से बातचीत करेंगे। स्वागत वक्तव्य के लिए वरिष्ठ एवं सुप्रसिद्ध लेखक उर्मिला शिरीष ऑनलाइन रूप से कार्यक्रम में अमेरिका से शिरकत करेंगी। दिलशाद ने बताया कि एक कवि की सृजन प्रक्रिया और समकाल में इस सृजन के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से यह रचनात्मक आयोजन किया जा रहा है, जो राजधानी की एक महत्वपूर्ण कवि पर एकाग्र है। इस कड़ी में निकट भविष्य में सिलसिलेवार आयोजन किये जाएंगे।

एम्स भोपाल के आयुष विभाग में स्वर्ण प्राशन का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में आयुष विभाग द्वारा प्रत्येक मास के पुष्य नक्षत्र के दिन स्वर्ण प्राशन कराया जा रहा है। इसी श्रृंखला में, आयुष विभाग में आयुर्वेद की ओ. पी. डी में स्वर्ण प्राशन कार्यक्रम का

अयोजन किया गया। साथ ही, इस अवसर पर बच्चों को योग भी कराया गया। स्वर्ण प्राशन के इस संस्करण में 94 बच्चों ने भाग लिया जिसमें 79 बच्चे पुराने थे तथा 15 नये बच्चों ने रजिस्ट्रेशन कराया। इस कार्यक्रम में आयुर्वेद चिकित्साधिकारी डॉ. रंजना पांडे ने 1 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों को स्वर्ण प्राशन कराया। पिछले एक वर्ष से आयुष विभाग के आयुर्वेद अनुभाग में बच्चों का निःशुल्क स्वर्ण प्राशन कराया जा रहा है। इसका प्रयोग आयुर्वेद में बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए किया जाता है। इस दौरान बच्चों की लंबाई, वजन आदि को मापा जाता है और लोगों को बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए स्वर्ण प्राशन का प्रयोग करने के लिए जागरूक किया जाता है।

एम्स की डॉ. रागिनी ने हेल्थकेयर में एआई की भूमिका पर दिया व्याख्यान

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संकाय सदस्य शैक्षणिक और शोध गतिविधियों में लगातार योगदान दे रहे हैं। हाल ही में, फिजियोलॉजी विभाग की डॉ. रागिनी श्रीवास्तव ने मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट), भोपाल में एक व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान हेल्थकेयर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)-आईआई पर आधारित फैकल्टी विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का हिस्सा था, जो 16 से 20 दिसंबर 2024 तक चला।

डॉ. रागिनी श्रीवास्तव ने 'कार्डियक ऑटोनोमिक फंक्शन्स के मूल्यांकन में एआई का उपयोग' विषय पर बात की। इस व्याख्यान में एमएएनआईटी के शिक्षक, पीएचडी विद्वान और पीजी छात्र सहित 30 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। उन्होंने ऑटोनोमिक फंक्शन टेस्ट के बारे में जानकारी दी और बताया कि एआई से इन टेस्ट में क्या बदलाव और सुधार आ सकते हैं।

सत्र के दौरान वर्तमान समय में किए जाने वाले ऑटोनोमिक फंक्शन टेस्ट और भविष्य में इसमें एआई के उपयोग के संभावित रास्तों पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने गहरी रुचि के साथ सवाल पूछे और बातचीत में हिस्सा लिया। इस व्याख्यान ने सभी को इस क्षेत्र में नई खोजों के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रो. सिंह ने कहा, एम्स भोपाल हमेशा शैक्षणिक उत्कृष्टता और नई तकनीकों पर आधारित शोध को बढ़ावा देने के लिए तत्पर है। इस तरह के कार्यक्रम चिकित्सा और प्रौद्योगिकी के मेल को बढ़ावा देते हैं और प्रतिभागियों को इन क्षेत्रों में कुछ नया करने के लिए प्रेरित करते हैं।

पक्के आवासों में रहेंगे अब सहरिया जनजाति के लोग

शिवपुरी जिले के पोहरी ब्लॉक की प्रथम जनमन आवासीय कॉलोनी बनकर हुई तैयार

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 जनवरी 2024 को शिवपुरी जिले के हातोद ग्राम पंचायत में 2 सहरिया जनजाति की महिलाओं से संवाद किया था, जिसमें पोहरी ब्लॉक की बूड़दा पंचायत की श्रीमति ललिता ने प्रधानमंत्री श्री मोदी से हातोद जैसी आवासीय कॉलोनी खुद की बूड़दा पंचायत में भी बनवाने की गुजारिश की थी। बूड़दा पंचायत के सहरिया जनजाति के लिए ये एक सपना जैसा था जो अब साकार हुआ है। शिवपुरी जिले की चौथी कॉलोनी एवं पोहरी ब्लॉक की पहली जनमन आवासीय कॉलोनी बनकर तैयार हो गई है।

मुख्य कार्यपाल अधिकारी जनपद पंचायत ने बताया कि कॉलोनी में 32 सहरिया हितग्राहियो के आवास बनाए गए हैं। इन आवासों की

खास बात ये है कि ये आवास शहरों की तर्ज पर बनाये गए है। इन आवासों में अब विशेष पिछड़ी जनजाति के सहरिया हितग्राही निवास करेंगे। इसके अतिरिक्त इन आवास में घर-घर नल एवं विद्युत कनेक्शन की सुविधा दी गयी है, साथ ही सड़क, सामुदायिक भवन, चौपाल आदि की सुविधा भी दी जाएगी।जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने बूड़दा पंचायत की जनमन कॉलोनी की पूर्णता में आ रही समस्त अड़चनों का समयसीमा में निराकरण किया और कॉलोनी की गुणवत्ता के लिए सूक्ष्मता से मॉनिटरिंग की। उनका कहना है कि समस्त जनमन कॉलोनी में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा गया है और आवास बेहद सुन्दर बनाए गए हैं। कॉलोनी का प्रथम आवास पूर्ण करने वाली श्रीमति ललिता का कहना है कि देश के प्रधानमंत्री श्री मोदी का बहुत धन्यवाद, जिन्होंने हमारे लिए इतनी सुन्दर आवास कॉलोनी बनवाई, उन्होंने हमारे घर का सपना पूरा किया है।

सामुदायिक भागीदारी से मध्यप्रदेश को टीबी से मुक्त करेंगे: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

निक्षय शिविर में जन-जागरूकता के लिये की जा रहीं रचनात्मक पहल

- दमोह में निजी चिकित्सक ओपीडी प्रिस्क्रिप्शन में दे रहे जागरूकता संदेश

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल कहा है कि टीबी उन्मूलन के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। निक्षय शिविर अभियान सामुदायिक भागीदारी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा। उन्होंने सभी सामाजिक संगठनों और समाजसेवकों से आह्वान किया है कि वे इस अभियान का हिस्सा बनें और हर टीबी मरीज तक जरूरी सहायता पहुंचाने में सहयोग करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने आसपास के टीबी मरीजों की पहचान करने और उन्हें समय पर इलाज दिलाने में सहयोग करें। यदि किसी व्यक्ति को लगातार दो सप्ताह से अधिक खांसी, बुखार या वजन घटने जैसी शिकायत हो, तो उसे तुरंत स्वास्थ्य केंद्र ले जाएं। टीबी का इलाज पूरी तरह संभव है, इसके लिए समय पर पहचान और उपचार महत्वपूर्ण है। सभी के समेकित प्रयास से टीबी मुक्त मध्य प्रदेश का लक्ष्य हम शीघ्र प्राप्त करेंगे। उन्होंने अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, संस्थाओं, निक्षय मित्रों की सराहना की है।

मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग द्वारा वर्ष 2025 तक टीबी (क्षय रोग) को समाप्त करने के राष्ट्रीय लक्ष्य को साकार करने के लिए व्यापक जनजागरूकता अभियान चला रहा है। इस अभियान के तहत समाज के हर वर्ग को जोड़ते हुए, एनजीओ, समाजसेवी संगठनों, और आम जनता से सक्रिय सहयोग की अपील की जा रही है। 100 दिवसीय नि-क्षय शिविर अभियान में प्रदेश के 23 उच्च प्राथमिकता वाले जिलों में टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाने, रोग की पहचान, रोकथाम और उपचार को गति देने के प्रयास किए जा रहे हैं। अभियान में टीबी की घटनादर में 80 प्रतिशत कमी लाने, मृत्यु दर में 90त्न गिरावट और मरीजों के चिकित्सा व्यय को शून्य करने के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये नि-क्षय मित्रों, स्वयंसेवकों और सामाजिक संगठनों को शामिल कर सघन प्रयास किये जा रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग ने टीबी के खिलाफ जागरूकता को जन-आंदोलन का रूप देने के लिए विभिन्न रचनात्मक पहलें की हैं। सिवनी जिले में 'न्यू पहल' फाउंडेशन ने 400 मस्जिदों में उर्दू भाषा में जागरूकता सामग्री प्रदाय की है, जिससे समुदाय के हर वर्ग तक टीबी की जानकारी पहुंचे। मंदसौर में ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर कमलेश भाटी ने एक शादी समारोह में टीबी जागरूकता का संदेश देकर समाज के बीच जागरूकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इसी तरह, जबलपुर रेलवे स्टेशन पर लाखों यात्रियों को टीबी की जानकारी देने के लिए पोस्टर और फ्लेक्स लगाए गए हैं।

विशेष शिविर लगाकर की जा रही हैं जाँच - इसके साथ ही, दमोह जिले में निजी चिकित्सकों ने अपने मरीजों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए ओपीडी प्रिस्क्रिप्शन में टीबी जागरूकता के संदेश देने की पहल की है। सीधी जिले में स्थानीय 'बघेली' भाषा में दीवार लेखन के माध्यम से सैकड़ों प्रेरक नारों को लिखा गया है, जो समुदाय के लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में मदद कर रहे हैं। दतिया में आईसीएमआर टीम ने जेल के कैदियों की हैंडहेल्ड एक्स-रे तकनीक से स्क्रीनिंग की, जबकि मंडला जिले के कार्यस्थलों पर शिविर लगाकर 417 मजदूरों की जांच की गई। इसी तरह, नीमच जिले में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने टीबी मरीजों को पोषण सामग्री उपलब्ध कराकर उनके समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की कोशिश की है।

राष्ट्रीय बाल रंग में स्कूल के बच्चों को भारत की विविध संस्कृति को जानने का मिलेगा मौका

निदेशक मानव संग्रहालय प्रो. अमिताभ पांडे ने किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय बाल रंग का प्रति वर्ष भोपाल में होना देशभर में मध्यप्रदेश को गौरवान्वित करता है। यह एक ऐसा मौका होता है, जब देश के विभिन्न प्रांतों के बच्चे अपने राज्यों की संस्कृति को समेटे प्रतिभा का प्रदर्शन भोपाल में करते हैं। यह विचार शुक्रवार को निदेशक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय प्रो. अमिताभ पांडे ने बाल रंग के शुभारंभ समारोह में व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न संभागों से आये एक हजार से अधिक और विभिन्न प्रांतों के बच्चे मौजूद थे।

निदेशक प्रो. पांडे ने कहा कि प्रति वर्ष बाल रंग में बच्चों के आने से मानव संग्रहालय में रौनक आ जाती है। तीन दिवसीय समारोह में बच्चे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। प्रतियोगिता में बच्चों में टीम भावना भविष्य में उनको जिम्मेदार नागरिक बनाने में काफी मददगार साबित होती है। उन्होंने कहा कि देश की एकता विभिन्न राज्यों की संस्कृतियों के सौहार्द मिलन से मजबूत होती है। प्रो. पांडे ने बच्चों को विभिन्न राज्यों में अधिक से अधिक मित्र बनाने की सलाह भी दी। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन के लिये स्कूल शिक्षा विभाग को बधाई दी।

संचालक लोक शिक्षण श्री डी.के. कुशवाह ने बताया कि बाल रंग बच्चों में नयी ऊर्जा पैदा करता है। उन्होंने कहा कि बाल रंग में लगने वाली प्रदर्शनी की थीम वर्ष 2047 में विकसित भारत रखी गयी है। स्वागत संबोधन में शिक्षा विभाग के अधिकारी श्री अरविन्द कुमार चौरगड़े ने बताया कि पहले दिन प्रदेश के विभिन्न संभागों के बच्चे लोक संस्कृति पर आधारित नृत्यों और विविध कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां देंगे। बाल रंग में 21 और 22 दिसम्बर को 17 राज्यों सहित 5 केन्द्र शासित प्रदेश के करीब 10 हजार बच्चे सहभागिता करेंगे।

विविध गतिविधियां

बाल रंग में स्कॉउट कैम्प, विजन-2024 पर केन्द्रित सजीव प्रदर्शनी, विभिन्न राज्यों के व्यंजनों के स्टॉल लगाये गये हैं। बाल रंग की सबसे खास बात यह है कि यहां प्रदेश के विभिन्न प्रांतों की संस्कृति की दर्शाने के लिये राज्यों की स्टॉल लगाये गये हैं। इन स्टॉलों में उन राज्यों के पुरातत्व स्थल, लोक संस्कृति, त्यौहार, मंदिर, पारंपरिक वेश-भूषा देखने को मिलेगी। केरल राज्य के पंडाल में भोपाल के जवाहर चौक स्थित कस्तूरबा स्कूल की बालिकाओं ने मॉडल के जरिये वहां की संस्कृति को दिखाने का प्रयास किया है। यहाँ पर केरल का प्रसिद्ध पद्मनाभस्वामी मंदिर का मॉडल प्रदर्शित किया गया है। प्राचार्य श्रीमती उषा भदौरिया और श्रीमती शालिनी श्रीवास्तव ने बताया कि केरल राज्य में ओणम का त्यौहार पारंपरिक रीति-रिवाजों और विशेष वेश-भूषा के साथ बनाया जाता है। बाल रंग में तात्कालिक भाषण, लोक गीत, शास्त्रीय नृत्य, सुगम संगीत, सामुहिक लोक नृत्य, दिव्यांगों की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं, वेद पाठ, नृत्य नाटिका, योग जैसी अनेक प्रतियोगिताएं होंगी। बाल रंग में 21 और 22 दिसम्बर को प्रात- 10 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजन होंगे।

एमपी में अगले 4 दिन 2-3 डिग्री बढ़ेगा तापमान

फिर कड़ाके की ठंड का दौर, ग्वालियर-चंबल संभाग में आज कोहरा रहा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगले 3-4 दिन तक रात का टेम्प्रेचर 2 से 3 डिग्री तक बढ़ेगा। वहीं, ग्वालियर, चंबल और सागर संभाग में कोहरा रहेगा। इसके बाद कड़ाके की ठंड का दौर फिर आएगा।

इस सप्ताह पूरे प्रदेश में तेज सर्दी से थोड़ी राहत मिली है। कई शहरों के पारे ने उछाल आया है। गुरुवार-शुक्रवार की रात खजुराहो में 5.2 डिग्री तो वहीं पचमढ़ी में 6.4 डिग्री पारा रिकॉर्ड किया गया। बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में सबसे कम 8.6 डिग्री, भोपाल में 8.8 डिग्री, जबलपुर में 10.0 डिग्री, उज्जैन में 11 डिग्री और इंदौर में 12.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया, पिछले सप्ताह पूरे प्रदेश में शीतलहर और कोल्ड डे यानी, ठंडे दिन की कंडीशन रही, जो दो-तीन दिन से खत्म हो गई है। इस कारण अगले 3-4 दिन तक रात के टेम्प्रेचर में बढ़ोतरी रहेगी। जिससे ठंड का असर कम रहेगा। उत्तर भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव है। इसके गुजरने के बाद बर्फबारी होगी। जिससे उत्तरी हवाएं फिर से चलने लगेंगी। इसके बाद प्रदेश में कड़ाके की ठंड का दौर फिर से आएगा।

आज इन शहरों में कोहरे का असर- ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़ और छतरपुर में आज कोहरे का असर रहेगा। दिन में धूप भी खिली रह सकती है।

अभी पचमढ़ी ही सबसे ठंडा, पारा 3.3 डिग्री- प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन पचमढ़ी अभी सबसे ठंडा है। यहां बुधवार-गुरुवार की रात में टेम्प्रेचर 3.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शहडोल के कल्याणपुर में 3.7 डिग्री, मंडला में 4.5 डिग्री, उमरिया में 5.3 डिग्री, उमरिया में 5.3 डिग्री, नौगांव में 5.4 डिग्री, राजगढ़ में 5.6 डिग्री और टीकमगढ़ में 6.7 डिग्री रहा। रीवा, रायसेन, मलाजखंड, छिंदवाड़ा में 8 डिग्री के नीचे रहा। बड़े शहरों में जबलपुर सबसे ठंडा है। यहां तापमान 5.2 डिग्री रहा। भोपाल-ग्वालियर में 6.4 डिग्री, उज्जैन में 9.8 डिग्री और इंदौर में 11.8 डिग्री सेल्सियस रहा।

डेयरी संचालक को कार ने टक्कर मारी, मौत

बीमा अस्पताल के सामने हुआ हादसा, पुलिस जांच में जुटी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पिपलानी थाना इलाके में स्थित बीमा अस्पताल के पास गुरुवार रात एक अज्ञात कार ने बाइक सवार डेयरी संचालक को टक्कर मार दी। हादसे में युवक की मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। पीएम के बाद शुक्रवार को बॉडी परिजनों को सौंप दी गई। आरोपी चालक की पहचान के लिए पुलिस सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही है।

सीढ़ी से गिरकर युवक की मौत

छोला मंदिर इलाके में स्थित राहुल सिंह (27) गुरुवार दोपहर को घर की सीढ़ियों से गिर गया। इलाज के दौरान रात को उसकी मौत हो गई। वह बैटरी ऑटो चलाता था। बुधवार को ही उसकी मां शांति ने उसे महाकाल दर्शन कराकर उज्जैन से भोपाल लौटाया था। युवक अविवाहित था और हाल ही में परिवार ने उसका रिश्ता तय किया था।

शाम को दूध बांटने निकले थे डेयर संचालक

पप्पू खान (55), सागौनी गांव रायसेन रोड के रहने वाले थे। गांव में उनकी डेयरी थी। वे शाम के समय दूध बांटने का काम भी करते थे। गुरुवार शाम को वे दूध बांटने के लिए घर से निकले। कई बंदियों को दूध देने के बाद रात के समय वे बीमा अस्पताल के पास पहुंचे। यहां अज्ञात कार ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में सिर में गंभीर चोट आने के कारण उनकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक के तीन बच्चे हैं, दो बेटे और एक बेटी। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

एम.पी. ट्रांसको की त्रैमासिक रिव्यू मीटिंग

आंधी तूफान का मौसम आने के पहले ट्रांसमिशन लाइनों का मेंटेनेन्स सुनिश्चित करें : एम.डी. इंजी.सुनील तिवारी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी के प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी ने निर्देश दिए कि फील्ड के अधिकारी समय रहते प्रदेश की ट्रांसमिशन लाइनों का मेंटेनेन्स सुनिश्चित कर लें। प्रबंध संचालक इंजी. सुनील तिवारी ने कहा कि वर्तमान रबी सीजन के दौरान मध्यप्रदेश में बढ़ते हुये लोड के मद्देनजर चाक-चौबंद व्यवस्था बनाये रखे। जिससे ट्रांसमिशन सिस्टम की स्थिरता कायम रखी जा सके। श्री तिवारी ने वर्तमान रबी सीजन में ट्रांसमिशन लाइनों और सब स्टेशनों पर लोडिंग और वर्तमान में चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि कार्यों की वर्क वाइस मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाये एवं उच्चतम मापदंड़ो के साथ सर्वोत्तम गुणवत्ता से कार्य समयसीमा में पूर्ण किये जाये। श्री तिवारी ने कहा कि एम.पी. ट्रांसको में विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से आयोजित की जा रही ट्रेनिंग के कारण आये गुणात्मक परिवर्तन की निरंतरता को बनाये रखें।

जीरो एक्सीडेंट लक्ष्य से करें कार्य

प्रबंध संचालक ने निर्देश दिए की फील्ड के अधिकारी ई.एच.टी. लाइनों और सब स्टेशनों में जीरो एक्सीडेंट लक्ष्य को ध्यान में रखकर सतर्कता और सुरक्षा के साथ मेंटेनेंस करें। उन्होंने कहा कि कंपनी में सुरक्षा के साथ कार्य करने का वर्क कल्चर निर्मित हो, क्योंकि मानव जीवन से महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। कार्य के दौरान सुरक्षा मापदंडों का पालन कड़ाई से कराया जाये। इस रिव्यू मीटिंग में एम.पी. ट्रांसको के मुख्यालय स्थित सभी विभागाध्यक्ष एवं प्रदेश के अधीक्षण अभियंता मौजूद थे।

मुख्यमंत्री आज उज्जैन आईटी पार्क का करेंगे भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन आईटी पार्क का भूमिपूजन 21 दिसंबर को करेंगे। कार्यक्रम उज्जैन इंजीनियरिंग कॉलेज, इंदौर रोड में आयोजित होगा। इस अवसर पर कौशल विकास एवं रोजगार व उज्जैन जिले के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे। उज्जैन आईटी पार्क लगभग 46 करोड़ रुपए की लागत से बनने जा रहा है। आईटी पार्क स्थापित होने से क्षेत्र में आईटी, आईटीएस, ईएसडीएम सेक्टर में निवेश के नए आयाम स्थापित होंगे और युवाओं को बड़ी संख्या में रोजगार मिलेगा। आईटी पार्क का विस्तार 2.16 हेक्टेयर भूमि पर होगा। पार्क की इमारत महाकाल की अनन्त की अवधारणा पर डिजाइन की जाएगी और 5 चरणों में इसका निर्माण होगा।

संपादकीय

संघ प्रमुख के निशाने पर कौन?

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत देश में आए दिन बढ़ रहे मंदिर मस्जिद विवादों पर चिंता जताते हुए इसे बढ़ावा देने वालों को इशारों इशारों में कड़ी चेतावनी दी है। संघ प्रमुख ने जो कहा है वो सारे देश के प्रबुद्ध जनों की चिंता है कि हम मंदिर मस्जिद में ही उलझे रहेंगे या प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि सरसंघचालक की बातों को वो तत्व गंभीरता से शायद ही लेते हैं, जिन्हें लेना चाहिए। दूसरे, संघ इस बात से भी चिंतित दिख रहा है कि नए नए हिंदू मुस्लिम विवादों को हवा देकर कुछ हिंदुओं के नए नेता बनना चाहते हैं। लेकिन ये व्यक्ति कौन है, इसे उन्होंने साफ तौर पर नहीं कहा। देश में सामाजिक समरसता कायम रहे, इसकी पैरवी संघ प्रमुख पहले भी कर चुके हैं, लेकिन व्यवहार में उसका असर कहीं नजर नहीं आ रहा। आज देश को वही तत्व चलाते ज्यादा दिख रहे हैं, जिनकी रूचि केवल धार्मिक और साम्प्रदायिक दरार को चौड़ी करने में है। गुरूवार को पुणे में सहजीवन व्याख्यानमाला में 'भारत-विश्वगुरु' विषय पर बोलते हुए डॉ. मोहन भागवत ने समावेशी समाज की वकालत की और कहा कि दुनिया को यह दिखाने की जरूरत है कि देश सद्भावना के साथ एक साथ रह सकता है। यहां कोई अल्पसंख्यक और कोई बहुसंख्यक नहीं है। देश में लगातार बढ़ रहे मंदिर मस्जिद विवाद पर नाराजी व्यक्त करते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि हाल के दिनों में मंदिरों का पता लगाने के लिए मस्जिदों के सर्वेक्षण की कई मांगें अदालतों तक पहुंची हैं। यह प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। हैरानी की बात है कि देश में 1991 का पूजा स्थल कानून लागू होने के बावजूद अदालतें ऐसे मामलों की न सिर्फ सुनवाई कर रही हैं बल्कि ऐसे स्थलों के सर्वे के आदेश भी दे रही हैं। पूजा स्थल कानून के विरोध में दाखिल याचिकाएं कहती हैं कि यह कानून हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन समुदाय को अपने उन पवित्र स्थलों पर दावा करने से रोकता है, जिनकी जगह पर जबरन मस्ज़िद, दरगाह या चर्च बना दिए गए थे। न्याय पाने के लिए कोर्ट आने के अधिकार से वंचित करना मौलिक अधिकार का हनन है। वहीं जमीयत उलेमा की याचिका इस कानून को बनाए रखने के पक्ष में है। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले दिनों केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर एक महीने के भीतर जवाब देने को कहा है। इस कानून के मुताबिक देश में धार्मिक स्थलों में वही स्थिति बनाई रखी जाए जो आजादी के दिन यानी 15 अगस्त 1947 को थी। केवल अयोध्या विवाद को इस कानून से अलग रखा गया था। यहां सवाल यह है कि कौन सा ऐसा नेता है जो संघ की मर्यादाओं को लांघकर हिंदुओंका बड़ा नेता बनना चाहता है। संघ प्रमुख ने जो कहा है कि उस क्राइटेरिया में तो केवल यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आते दिखते हैं। यूपी में लोकसभा चुनाव में भाजपा की करारी हार के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हार का ठीकरा योगी आदित्यनाथ पर फोड़कर उन्हें हटाने की तैयारी कर ली थी। लेकिन तब संघ ही योगी के पक्ष में डटा रहा। उसके बाद राज्य में 9 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में से 7 सीटें जीतकर योगी ने अपना जलवा वापस कायम कर दिया। वो और ज्यादा मुखर हिंदुत्ववादी के रूप में उभरे हैं। बल्कि अब तो उन्हें देश में मोदी के भावी विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। तो क्या योगी का बढ़ता कद संघ को सुहा नहीं रहा है? क्या उनकी उलटी गिनती शुरू हो चुकी है?

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। आप केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

हर द्वंद्व के खिलाफ थे डॉ. अंबेडकर

भारतीय संविधान पर बहस होते-होते उस मोकाम पर हमारे देश के राजनेता सदन में पहुँच गए, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। डॉ. आंबेडकर की आत्मा दुखी होगी, यह सब देखकर कि देश के सांसद क्या कर रहे हैं? सांसदों ने डॉ. आंबेडकर को अपना हथियार बनाकर अपनी राजनीति शुरू कर दी, इससे तो कम से कम डॉ. आंबेडकर कभी खुश नहीं हो सकते। उनके लिए देश के सभी नागरिक ईमानदारी से समान थे, समान हैं और रहेंगे। डॉ. आंबेडकर ने संविधान के निर्माण में जितना भी सहयोग दिया वह उदाहरणीय है लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि संविधान पर चर्चा करते-करते संविधान स्वीकृति के 75वीं वर्षगांठ पर सदन में हंगामा करना।

भारतीय संसद में सत्ता पक्ष और विपक्ष डॉ. आंबेडकर के अपने-अपने मायने, अपने-अपने सरोकार, अपनी-अपनी डफली अपने-अपने राग के अनुसार समझना और व्याख्यायित करना शुरू कर दिया है। देश में डॉ. आंबेडकर को लेकर फैलाये जा रहे भ्रम और उनके नाम पर सेंकी जा रही रोटी कभी भी देश हित में नहीं है। भारत का यह दुर्भाग्य-काल चल रहा है कि संविधान की बहस के बीच नए तरह से डॉ. आंबेडकर पर केन्द्रित विभ्रम और युद्ध शुरू हो गए हैं। देश की 150 करोड़ की आबादी इसे सहने को मजबूर है। देश इसे सहने के लिए मजबूर है।

भारत में प्रतीकों की लड़ाई सदन में देखने को मिली। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने भारतीय आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी बात की शुरुआत की। पूरी बात सुनेंगे तो उनके कहने का आशय वह बिलकुल नहीं था जिसे प्रचारित किया गया और जिस पर हो हल्ला शुरू हुआ। वह डॉ. आंबेडकर के लिए किसी प्रकार का अनादर नहीं रखते, ऐसा पता चलता है, यदि पूरी बात उनकी सुनी जाए। भारत में अध्यात्म और सनातन संस्कृति की अपनी आत्मशक्ति है। यदि इसे भारतीय तरह से कहा-सुना नहीं जाएगा तो किसी दूसरे पृथ्वी के हिस्से में वह नहीं कहा-सुना जा सकता है, इसे तो कम से कम भारतीयों को समझना चाहिए। प्रतीकों की राजनीति क्या होती है यह अमित शाह के बयान के बाद देश में देखने सुनने को मिला। सभी ने डॉ. आंबेडकर के चित्रों को हाथ में लेकर प्रदर्शन किया। सभी ने नीले वस्त्र पहने। सभी ने यह कहा कि आंबेडकर हमारे भगवान् हैं। डॉ. आंबेडकर ने कभी नहीं कहा कि हमें आप भगवान् मानो या भगवान् कहो। लेकिन खूब उन्हें अपना भगवान कहा जा रहा है। जब वे जीवित थे तो उन्हें उतनी इज्जत नहीं मिली। उन्होंने अपने लिए अपनी अजघ बनायीं और देश में खुद को उन्होंने स्थापित किया। यह भगवान्-भगवान् खेलने की जगह, डॉ. आंबेडकर के स्वप्न का भारत यदि देश के लोग गढ़ने की कोशिश करते तो देश का ज़रूर भला हो जाता।

सबसे पहले इसके लिए दो चीजें छोडनी होगी, डॉ. आंबेडकर के विषय में। एक यह कि डॉ. आंबेडकर को भगवान् बनाया जाए, दूसरी बात डॉ. आंबेडकर पर राजनीति करना भी छोड़ना ही होगा। यदि भारतीय नागरिकों के समानता और समरसता की बात डॉ. आंबेडकर ने की। यदि डॉ. आंबेडकर ने भारतीय जन के अधिकारों की बात की, वही सरकार और सत्ता पक्ष के लोग कृपा करके दे दें। उनके नाम पर कपर-फोरौउल करने से कुछ काम नहीं बनने बाला है और न ही देश का विकास होने वाला है। देश का विकास तो शांतिपूर्वक सदन में बैठकर देश हित में चिंतन और मनन के माध्यम से संभव है। सदन के भीतर बैठे लोग देश हित की बात की जगह अपने हितों को साधने में ज्यादा घुस चुके हैं। संविधान, देश, नागरिक और सभ्यतागत विकास की बातें गौड़ हो गयी हैं। हिंदुस्तान विश्व में अपनी भले महिमा मंडन कर रहा हो लेकिन सदन के भीतर के शोर और क्रंदन भारत की असलियत बताने के लिए काफी हैं।

लोक सभा सचिवालय ने एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया था डॉ. आंबेडकर पर 'डॉ. बी. आर. आंबेडकर' शीर्षक से, उसे हर सांसद को पहले पढ़ना चाहिए। कम से कम डॉ. आंबेडकर की मूल बात को लोग समझ पाते। केवल पृष्ठ 67-75 यही नौ पृष्ठ पढ़ लें तो भी उन्हें समझ लेंगे। एक संघीय सरकार को समझने के लिए डॉ. आंबेडकर ने कुछ विचार ब्रूक के माध्यम से प्रकट की थी। यह आपसी युद्ध या हिंसा की दहलीज पर जो संसद के प्रवेश द्वार सांसद की छवि दो दिन में सामने आई है। ऐसी हालत उन दिनों भी बनी हुई थी। आपसी द्वंद्व बना हुआ था। डॉ. आंबेडकर ने कहा था, 'सभापति जी, परिषद् के कुछ सदस्यों की ओर से मैं यह भी सुनता आ रहा हूं कि वे युद्ध के लिए तैयार है। मैं अवश्य यह स्वीकार करूंगा। मैं इस कल्पना से ही कांप उठता हूं कि इस देश का कोई भी व्यक्ति यह सोचे कि युद्ध द्वारा वह देश की राजनैतिक समस्या हल कर लेगा।' आज जो द्वंद्व है, इसी बात की पड़ताल करने को कह रहा है। ब्रूक को कोट करते हुए डॉ. आंबेडकर ने यह बहुत साफ़ साफ कहा था, बल-प्रयोग से सदा आतंक ही नहीं पैदा होता। अगर हम सदा शस्त्र ही उठाये रहें तो फिर यह विजय कैसी? बलप्रयोग में अगर आप असफल होते हैं तो फिर कोई साधन आपके पास नहीं रह जाता। अगर आप मीठे तरीके से सुलह करने में असफल होते हैं बलप्रयोग का साधन आपके हाथ में रहता है परन्तु बल प्रयोग में अगर आप हारे तो फिर समझौते की कोई और गुंजायश नहीं रहती। दया दिखाने से अधिकार और शक्ति तो कभी-कभी प्राप्त हो जाते हैं पर बल प्रयोग में पराजित होने पर आप अधिकार की भीख नहीं मांग सकते।...बल-प्रयोग के विरूद्ध मेरी और आपत्ति यह है कि इसके द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास में आप अपने लक्ष्य को ही क्षीण और दुर्बल बना देते हैं। बल प्रयोग में विजयी होने पर आपको क्या मिलता है? जो भी आप पाते हैं, वह युद्ध के सिलसिले में प्रायः मूल्यहीन, जर्जरित और बर्बाद हो चुका रहता है।

ब्रूक के इस दार्शनिक बातों को डॉ. आंबेडकर उन दिनों समझाने का प्रयास किये हैं। आज जब शिष्टजन भारतीय संसद में द्वंद्व की स्थिति में आहें, तो यह बात सोचने की है कि वे डॉ. आंबेडकर के किस अवधारणा को आत्मसात करके ऐसा कर रहे हैं और वे डॉ. आंबेडकर के लिए भी खुद क्या करना चाहते हैं? भारतीय जनमानस को जो मिडिया द्वारा दिखाया जायेगा, जो समझाया जायेगा। जो परोसा जायेगा, वह तो वही जानती है। जो देश के नेतृत्व की जिम्मेदारी लिए हैं, सोचना उनको है कि वे आखिर किस तरह से भारत निर्मित करने को तैयार हैं युद्ध, संघर्ष और द्वेष के द्वंद्व के साथ या डॉ. आंबेडकर के मूल स्वभाव को समझकर? जब हम बहक जाते हैं तो हमारे दृष्टिकोण भी बदलने लगते हैं। जब हम बहकाने लगते हैं तो देश के विकास की दिशा भी बदलने लगती है। जब हम षड्यंत्र करके अपने हितों को प्राथमिकता देते हैं तो हम अपने मूल्यों के साथ खिलवाड़ करते हैं। भारतीय इतिहास ऐसे लोगों को कभी माफ़ नहीं करता। भारतीय इतिहास ऐसे लोगों को सदैव प्रश्नों के घेरे में खड़ा करता है।

डॉ. आंबेडकर की ही मान लें। उनके ही विचार मैं ज्यों का त्यों समझें। उन्होंने कहा था- इसलिए जहां तक हमारे लक्ष्य का संबंध है, हममें से किसी को भी कोई आशंका नहीं होनी चाहिए, कोई संदेह न होना चाहिए। हमारी कठिनाई यह नहीं है कि हमारा भविष्य क्या होगा। हमारी कठिनाई तो यह है कि अपनी आज की इस विशाल, पर बेमेल आबादी को किस तरह इस बात पर आमादा करें कि वह मिल-जुलकर एक फैसला करे और ऐसा पथ ग्रहण करें कि हम सब एक हो जाएं। हमारी कठिनाई इति को लेकर नहीं अथ को लेकर है। हमारा लक्ष्य क्या है, यह तो साफ है। पर परेशानी यह है कि काम शुरु कैसे करें। शायद उन दिनों डॉ. आंबेडकर द्वारा पूछे गए प्रश्न आज भी भारतीय राजनीति से उसी सवाल को पूछ रहे हैं। कदाचित हमारे मन के भीतर बैठी मैल हट जाए तो द्वंद्व की जगह लक्ष्य की ओर भारत बिना गतिरोध के आगे बढ़ चलता।

मुद्दा

अवधेश कुमार
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एक साथ चुनाव की ओर अग्रसर हुआ देश

एक देश एक चुनाव विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत किए जाने के समय विपक्षियों का विरोध अनअपेक्षित नहीं है। जब से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका विचार देश के समक्ष रखा विरोधी पार्टियां तभी से इसके विरुद्ध रहीं हैन। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने हालांकि प्रस्तुत करते समय विपक्ष की अनेक आशंकाओं का उत्तर देते हुए स्पष्ट किया यह किसी तरह न राज्यों की शक्तियों के साथ छेड़छाड़ करता है न संघीय ढांचा को कमजोर करता है और न ही संविधान की सर्वोच्चता या मूल ढांचे के ही विपरीत है। विपक्ष को इसे स्वीकार नहीं करना था और फिर मत विभाजन , जिसमें विरोध में 198 और पक्ष में 269 मत के बाद ही विधेयक पेश किया गया। पहले से माना जा रहा था कि सरकार तत्काल इसे संयुक्त संसदीय समिति को भेजेगी और यही हुआ। विधेयक पेश होने के बाद भी यह मानने वाले लोग ज्यादा नहीं होंगे कि आगामी कुछ वर्षों में एक निश्चित अवधि के भीतर लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव कराए जा सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा इस दिशा में दिखाई गई प्रतिबद्धता और तत्परता निस्संदेह उम्मीद जगाती है कि चुनावों का बिगड़ा हुआ क्रम पटरी पर आएगा। हालांकि व्यावहारिक प्रारूपों के साथ लोकसभा में विधेयक प्रस्तुत होने के बाद इसे अव्यावहारिक व असंभव मानने वालों की सोच में बदलाव आएगा। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित 8 सदस्यीय समिति की रिपोर्ट आने के बाद ही मान लिया जाना चाहिए था कि मोदी सरकार विरोधियों द्वारा उठाई जा रही आशंकाओं और आलोचनाओं के बावजूद एक साथ चुनाव करने के अपने लक्ष्य को साकार करना चाहती है। पिछले 12 दिसंबर को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा इसकी स्वीकृति के बाद अगला कदम विधेयक पेश होना था। इसके बाद इसका पारित होना ही शेष है।

चुनाव के लिए 129 वें संशोधन विधेयक में स्पष्ट रूप से संविधान संशोधनों से लेकर उन सभी बातों का रेखांकन है जिनसे यह साकार हो सकता है। इसमें दो विधेयक हैं। एक संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने के लिए और दूसरा विधानसभाओं वाले तीन केंद्र शासित प्रदेशों के एक साथ चुनाव कराने के संबंध में। स्थानीय निकाय चुनावों को भविष्य के लिए छोड़ा गया है। संविधान संशोधन के द्वारा एक नये अनुच्छेद जोड़ने और तीन अनुच्छेदों में संशोधन करने का प्रस्ताव है। एक, अनुच्छेद- 82(ए) जोड़ा जाएगा, ताकि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ आयोजित हो जाएं। दो, अनुच्छेद- 83 संसद के सदनों के कार्यकाल से संबंधित अनुच्छेद 83 तथा राज्य विधानसभाओं के कार्यकाल से संबंधित अनुच्छेद 172 और विधानसभाओं के चुनाव से संबंधित कानून निर्मित करने में संसद की शक्ति वाला अनुच्छेद 327 में संशोधन किया जाएगा। इसके द्वारा यह प्रावधान किया जाएगा कि आम चुनाव के बाद लोकसभा की पहली बैठक की तिथि के लिए राष्ट्रपति अधिसूचना जारी करेंगे। अधिसूचना की तिथि को नियुक्ति तिथि माना जाएगा और लोकसभा का कार्यकाल नियुक्ति तिथि से पूरे 5 वर्ष का होगा।

केंद्र शासित प्रदेशों से जुड़े जिन तीन कानूनों में संशोधन का प्रस्ताव हैं, वे हैं द गवर्नमेंट ऑफ यूनियन टेरिटरीज एक्ट- 1963, द गवर्नमेंट ऑफ नेशनल कैपिटल टेरिटरी ऑफ दिल्ली- 1991 और द जम्मू एंड कश्मीर रिऑर्गनाइजेशन एक्ट- 2019 शामिल हैं। यह प्रश्न उठाया जाता रहा है कि अगर बीच में किन्हीं कारणों से सरकार गिर गई तो क्रम कैसे बनाए रखा जाएगा? इसका उत्तर यह है कि लोकसभा या किसी राज्य की विधानसभा समय से पहले भंग होने पर बचे हुए कार्यकाल के लिए ही चुनाव कराए जाएंगे। वास्तव में विधेयक पारित हो जाएं तो 2034 से देश में एक साथ चुनाव संपन्न हो जाएगा।

जिन लोगों ने कोविंद समिति की रिपोर्ट पढ़ी उन्हें इन सारी बातों की जानकारी होगी। ये विधेयक उस रिपोर्ट के अनुरूप ही हैं। रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 2 सितंबर, 2023 को गठित समिति ने 191 दिनों में विशेषज्ञों से लेकर संबंधित सभी स्टेकहोल्डरों से चर्चा के बाद 14 मार्च, 2024 को पूरी विस्तृत रिपोर्ट राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को सौंपी थी। उसमें उठाए जा रहे सारे प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश थी। कोविंद समिति ने यह रेखांकित किया था और सच भी है कि अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम ऐसे राज्य जहां विधानसभा और लोकसभा चुनाव एक साथ होते हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और मिजोरम के चुनाव लोकसभा चुनाव कुछ पहले होते हैं तो लोकसभा चुनाव खत्म होने के छह महीने के भीतर हरियाणा, जम्मू कश्मीर, महाराष्ट्र और झारखंड में। इसके बाद दिल्ली और फिर बिहार। तो 15 राज्यों को उनकी विधानसभाओं का कार्यकाल थोड़ा आगे बढ़ाने या पीछे करने से ज्यादा समस्या नहीं होगी।

जिनने 1990 और सन 2000 के दशक की शर्मनाक अस्थिरता और उसके कारण उत्पन्न भयानक राजनीतिक, वैधानिक, नैतिक, आर्थिक, न्यायिक आदि बहु स्तरीय समस्याओं और जटिलताओं को देखा ध झेला है व निश्चित रूप से चाहेंगे कि एक साथ चुनाव संपन्न हो जाएं। हालांकि 2010 के बाद राज्यों में स्थिरता आई है किंतु उसके पहले की स्थितियां थी हमारे सामने हैं। केंद्र में भी 1999 से गठबंधन सरकारें भी स्थिर रहीं तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2014 2019 में देश ने एक पार्टी को बहुमत दिया। किंतु राजनीतिक स्थिति को देखते हुए वैसी अस्थिरता के खतरे को अभी भी टाला नहीं जा सकता। दूसरे, हर वर्ष कुछ विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव के कारण राजनीतिक दल जन समर्थन बनाए रखने के लिए आवश्यक देशहित और जनहित के मुद्दों पर चाहते हुए एकजुट नहीं होते, अपने मतदाताओं को लुभाने के लिए ऐसे स्टैंड लेते हैं जो जनहित और देश हित के विपरीत भी होता है। इनका दुष्परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ता है। 1967 तक सारे चुनाव एक साथ होते थे। 1967 में आठ राज्यों में विपक्ष की संवित सरकारों के आने, कांग्रेस के अंदर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के विरुद्ध विद्रोह और विभाजन, कांग्रेस द्वारा समय पूर्व प्रदेश सरकारों को भंग कर राष्ट्रपति शासन लगाने तथा लोकसभा का चुनाव निर्धारित समय से एक वर्ष पहले 1971 में करा लेने से पूरी चुनावी व्यवस्था पटरी से उतर गई। फिर आपातकाल में लोकसभा का कार्यकाल एक वर्ष बढ़ा दिया गया और 1977 में बनी हजनता पार्टी की सरकार 1980 में गिर गई। उसके बाद केंद्र से लेकर राज्यों तक अलग-अलग समय अस्थिरता का दौर रहा और भारत को जहां होना चाहिए वहां नहीं पहुंच सका, क्योंकि राजनीतिक नेतृत्व की क्षमता देश की चिंता से ज्यादा सरकारों में आने उसमें बने रहने या बनाए रखने पर केंद्रित हो गया। इससे पूरे देश में ऐसे नेताओं और जनप्रतिनिधियों का आविर्भाव हुआ जिनके उद्देश्य में ही देशहित और जनहित नहीं था। तो राजनीतिक विकृतियों के कारण असहज और अस्वाभाविकता को ही सहज मान कर बनाए रखना और उसे पटरी पर नहीं लाने का क्या औचित्य है? यह पूरे देश के लिए अहितकर है। इसलिये एक साथ चुनाव का समर्थन करना चाहिए।

रामनाथ कोविंद समिति ने रिपोर्ट तैयार करने के पहले कई देशों की चुनाव प्रक्रियाओं का अध्ययन किया। ये देश हैं , स्वीडन, बेल्जियम, जर्मनी, जापान, फिलीपींस, इंडोनेशिया और दक्षिण अफ्रीका। दक्षिण अफ्रीका में नेशनल असेंबली और प्रोविंशियल लेजिसलेच्योर के लिए एक साथ मतदान होता है। नगरपालिका चुनाव प्रांतीय चुनाव से अलग होते हैं। स्वीडन अनुपातिक चुनावी प्रणाली अपनाता है। यानी राजनीतिक दलों को उनके वोटों के आधार पर निर्वाचित विधानसभा में सीटें दी जाती हैं। उनकी प्रणाली में संसद (रिक्सडैग) , काउंटी और नगर परिषदों के लिए चुनाव एक ही समय हर वर्ष सितंबर के दूसरे रविवार को होते हैं। हर 5 वर्ष में एक बार सितंबर के दूसरे रविवार को नगरपालिकाओं व विधानसभाओं के चुनाव होते हैं। जापान में प्रधानमंत्री को पहले नेशनल डाइट सिलेक्ट करती है। उसके बाद सम्राट मुहर लगाते हैं। इंडोनेशिया 2019 से एक साथ चुनाव करा रहा है। यहां राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति दोनों एक ही दिन चुने जाते हैं। 14 फरवरी , 2024 को इंडोनेशिया ने एक साथ चुनाव कराए। इसे दुनिया का सबसे बड़ा एकदिवसीय चुनाव कहा जा रहा है क्योंकि लगभग 20 करोड़ लोगों ने सभी पांच स्तरों राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति , संसद सदस्य, क्षेत्रीय और नगर निगम के सदस्यों के लिए मतदान किया। तो जो ये देश कर सकते हैं हम क्यों नहीं कर सकते?

प्रश्न उठ सकता है कि आखिर इन संशोधनों को मोदी सरकार दोनों सदनों में पारित कैसे कराएगी क्योंकि इसके लिए दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता है? तत्काल इसमें समस्या दिखती है क्योंकि विपक्ष सरकार के साथ हर विषय पर आर-पार के मूड में रहती है। सरकार ने विपक्ष से बात करने के लिए वरिष्ठ मंत्रियों को विशेष उत्तरदायित्व दिया है और सदन के बाहर नेताओं से वार्ता के साथ संयुक्त संसदीय समिति में भी सहमति बनाने का पूरा प्रयास होगा। राजनीति देशहित और जनहित में ही होनी चाहिए और इसमें यही मूल लक्ष्य निहित है। इसलिए उम्मीद कर सकते हैं कि अंततः दोनों सदनों में इतना समर्थन मिल जाएगा जिसे आप विधायक पारित हो जाए।

हमारी संसद आखिर 'बड़ी' कब होगी?

सामयिक

ध्रुव शुक्ल
लेखक साहित्यकार हैं।

राजनीति एक कुटिल कर्म है। उससे पवित्रता की उम्मीद करना ही व्यर्थ है। जब लोग सदियों पहले अपनी-अपनी तृष्णाओं को पूरा करने की होड़ में एक-दूसरे की परवाह करना भूलने लगे होंगे तब उन्हीं के बीच से किसी स्वार्थी आदमी को उनका नेता बनकर उन्हें ठगने की बात सूझी होगी। पुराने कबीलों से लेकर पार्लियामेण्ट तक किसी न किसी रूप में यही क्रम चलता आ रहा है। ज़्यादातर अपने आपसे हारे हुए लोग ही अब तक अपने बीच से इसी तरह के ठगों को अपना नेता मानते आये हैं।

आज भी नेताओं की जीत सबके स्वार्थ साधने के आश्वासनों पर टिकी है। जब स्वार्थ नहीं सधते तो अपने आपसे हारे हुए लोग नेताओं को हराने लगते हैं और जो एक बार नेता बन जाते हैं वे कभी हारना नहीं चाहते। वे अपनी जीत सुनिश्चित किये रहने के लिए उन साधनों को भी लुटाने लगते हैं जो प्रकृति ने सबके जीवनयापन के लिए सबको पहले से ही प्रदान किये हैं। इन साधनों को बचाये रखने की जिम्मेदारी सबकी है, केवल नेताओं की नहीं।

हवा, पानी, प्रकाश,और आकाश जानते ही नहीं कि पृथ्वी पर बसे किस देश में किस दल के नेताओं का राज्य है। प्रकृति यह भी नहीं जानती कि किसने किसकी ग़ुलामी स्वीकार कर ली है और कौन स्वतंत्र है। वह तो अपने स्वभाव में बरत रही है। कोई भी राज्य व्यवस्था प्रकृति के बिना और उससे बाहर नहीं है। प्रकृति केवल आदमी का नहीं, प्राणीमात्र का गुजारा चलाने के लिए है। जिन प्राणियों को आदमी मारकर खाता है वह उन्हें भी पालती पोसती है।

आधुनिक राज्य व्यवस्था की अर्थनीति तो अनेक प्राणियों की मृत्यु पर आधारित है। गायें, बकरियां, मछलियां और पक्षियों के प्राण लेकर उन्हें आदमी की भूख बुझाने के लिए बेचा जाता है। अब तो राज्य व्यवस्था आदमी की जान बचाने का आश्वासन देकर युद्धों और आतंक की रचना करके आदमी की मौत को ही मुनाफे के व्यापार में बदल रही है। व्यापक जीवन में भय और दरिद्रता को बनाये रखकर उपकार का ढिंढोरा पीटना राजनीतिक धंधा है।

महात्मा गांधी की याद आती है। वे इतिहास से सबक सीखकर सबको याद दिलाते रहे कि ---- आधुनिक पार्लियामेण्ट में भले ही जनता के चुने हुए प्रतिनिधि जाते हैं पर वे दिखावटी और स्वार्थी पाये जाते हैं। सब अपना मतलब साधने की सोचते हैं। पार्लियामेण्ट जनता के हाथ में दिया गया महंगा खिलौना है जो देश को भारी खर्चे में डालता है। पार्लियामेण्ट शरारती बच्चों की भीड़ जैसी है। गांधी जी आश्चर्य से भरकर पूछते हैं कि यह बेबी पार्लियामेण्ट बड़ी कब होगी?

केवल अपना दल जीते, यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए घातक है। प्रतिपक्ष के बिना लोकतंत्र का कोई लोकहितकारी अर्थ ही नहीं रह जायेगा। एकाधिकार लोकतंत्र की शान पर बट्टा लगाने जैसा है। जो निस्स्वार्थ नेता जनता का दिल जीतकर संसद में जायेंगे वे ही उम्मीद के काबिल होंगे। आखिरकार लोकतंत्र का आधार द्वेषपूर्ण राजनीतिक प्रतियोगिता नहीं, प्रेम ही होना चाहिए। तभी तो संविधान उस बंधुता के मूल्य की याद दिलाता है जिसके बिना समता, स्वतंत्रता और न्याय को साधा नहीं जा सकता।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश रायकवार
लेखक व्यंग्यकार हैं।

चुनावी खेत किसान और फसल

वृक्ष दो प्रकार के होते हैंप्रथम जो पतझड़ वाले होते हैं अर्थात जिनकी पत्तियाँ शरदऋतु आने पर झड़ जाती है और बसंतऋतु में फिर नई पत्तियाँ आती हैं। दूसरे प्रकार के वृक्ष चिरहरित, बारहमासी, सदा हरे-भरे रहने वाले या सदाबहार वृक्ष होते है जिनकी पत्तियाँ झड़ती रहती है और साथ ही नई भी आती रहती है।

अपने देश में सदाबहार शब्द का उपयोग समान्यतः फिल्मी हीरो और फिल्मी गानों के लिएही अधिक होता है। किन्तु अब देश के चुनाव को भी सदाबहार की श्रेणी में रखा जाना चाहिए क्योंकि वर्ष के बारहों महीने तीन सौ पैंसठ दिन हमारे यहाँ कोई ना कोई चुनाव चलता ही रहता है।

लोकसभाचुनाव के बाद राज्यों के विधान सभा चुनाव फिरनगर निगम, नगर पालिका और नगर पंचायत एवं पंचायतों, जिला पंचायतों के चुनाव। कभी पंचायतसमितियों के चुनाव,कभी सहकारी बैंकों के चुनाव। कहीं विद्यालयों में तो कहीं महाविद्यालय और विश्व विद्यालयों में चुनाव। कभी मजदूर यूनियन और मंडलों के चुनाव तो कभी सामाजिक संस्थाओं के चुनाव याने कि देश में चुनाव का मौसम कभी समाप्त ही नहीं होता है।

देश में कुछ राजनैतिक पार्टियां और कुछ राजनैतिक परिवार ऐसे भी हैं जो वटवृक्ष की तरह सदाबहार वृक्षों की श्रेणी में आते है। चुनाव का स्थान, मौसम कोई भी हो उनका झण्डा-डंडा हर जगह दिखाई देगा।चुनाव की घोषणा होते ही पतझड़ के ऋतुकाल में जैसे पेड़ों से पत्तियाँ झडती है वैसे ही कुछ राजनैतिक पार्टियों में भी पतझड़ का मौसम आ जाता है। राजनैतिक पार्टियों की कुछ प्रजातियाँ क्षेत्रीय वनस्पति की तरह होती है जो किसी क्षेत्र विशेष में ही पनपती है। जैसे इन वनस्पतियों को केवल उस क्षेत्र विशेष की जलवायु ही अनुकूल होती है वैसे ही ये पार्टियां भी होती हैं, अन्य क्षेत्रों में ये पनप नहीं पाती है या मुरझा जाती है।

जैसे एक किसान फसल लगाने से पहले खेत में हल-बक्खर चलाकर जोतता है व निंदई-गुढ़ई करके अपने खेत को फसल बोवनी के लिए तैयार करता है ठीक वैसे ही हमारे देश का चुनाव आयोग तथा नेतागण अपने अपने हिसाब से चुनाव करवाने की जमीन तैयार करते है। चुनाव आयोग पोलिंग बूथ निर्धारण, पुलिस और सुरक्षा बलों की व्यवस्था, ईवीएम मशीनों की व्यवस्था आदि करता है तथा इन व्यवस्थाओं के बाद ही चुनाव अधिसूचना जारी करता है अर्थात चुनाव की बोवनी हो जाती है। इसी प्रकार नेतागण भी अपनी जमीन तैयार करने के अंतर्गत पार्टी और बीज रूपी वादों का चयन एवं खाद के रूप में नारों आदि की तैयारी करते है।

वैसे लागत के मान से चुनावों की ये फसलें बहुत मंहगी हैं। देश के लिए वर्ष 2019 के आंकड़ों के अनुसार 6500 करोड़ रुपय तो केवल आम चुनाव पर खर्च हुए थे।यदि चुनाव की इन फसलों पर किए जाने वाले सरकारी खर्च और पक्ष-विपक्ष के उम्मीदवारों द्वारा किए जाने वाले खर्च को जोड़ लिया जाए तो बांग्लादेश, श्रीलंका या नेपाल और म्यांमार जैसे देश का कुल बजट खर्च भी उससे कम ही रहेगा। जितनी बड़ी राशि चुनावों पर खर्च की जाती है उसे यदि देश की शिक्षा,स्वास्थ्य और विज्ञान पर खर्च किया जाए तो देश के विकास की गति चीते को भी पीछे छोड़ दे।

चुनावों की सदाबहार-फसल के उत्पादन के रूप में हमारेदेश को कुल 543 सांसद, 245 राज्यसभा सदस्य , 31 विधान-सभाओं के लिए 4153 विधायक तथा हजारों पार्षद, महापौर, पंच, सरपंच आदि लोकसभा, राज्यसभा सहित अलग-अलग सदन के लिए मिलते हैं। जैसे किसान को अपनी फसल से उम्मीद होती है वैसे ही जनता को भी इन चुने हुए लोगों से अपेक्षा रहती है कि विभिन्न सदनों में ये लोग हमारी और देश की समस्याओं पर विचार/मंथन करेंगे और उनका उचित समाधान भी। किन्तु फिर भी कभी कर्मचारी को तो कभी व्यापारी को, कभी कृषकों को तो कभी बेरोजगारों को अपनी-अपनी मांगों या व्यवस्था के लिए सड़क परउतरना ही पड़ता है? फिर प्रश्न यह उठता है कि ये प्रतिनिधि रूपी प्रॉडक्ट क्या घर के गमलों में सजे सजावटी पौधों की तरह सिर्फ सरकारी खर्चों पर मुफ्त टेलीफोन, मुफ्त भोजन, मुफ्त सरकारी आवास, पेंशन एवं अन्य सुविधाएं भोगने के लिए ही चुनकर जाते है?

विश्व ध्यान दिवस पर विशेष

डॉ लोकेन्द्र सिंह कोट

लेखक योग, ध्यान, के प्रशिक्षक हैं।

प्राचीन ध्यान का आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रमाणीकरण

ध्यान एक और प्राचीन विज्ञान है। यह एक मन-प्रशिक्षण तकनीक है जिसका पिछले दो दशकों से न्यूरोसाइंटिस्ट मानसिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए इसके लाभों को साबित करने के लिए अध्ययन कर रहे हैं। परंपरागत रूप से, लोग आध्यात्मिक विकास के लिए ध्यान करते हैं/ साथ ही दया, करुणा और परोपकार जैसे अपने सर्वोत्तम गुणों को सामने लाने के लिए। ध्यान के स्वास्थ्य लाभों पर हाल ही में वैज्ञानिक जांच लोगों को ध्यान करने का एक और व्यावहारिक कारण दे रही है, जिसमें तंत्रिका विज्ञान ने ध्यान के कई लाभकारी स्वास्थ्य प्रभावों को मान्य किया है। जबकि ध्यान अनुसंधान अभी भी प्रारंभिक चरण में है, अब तक के अध्ययनों से ध्यान के लाभों की एक लंबी सूची का पता चलता है जो सभी को आकर्षित कर रहे हैं/ इन अध्ययनों को रेंडम नियंत्रित परीक्षणों और FMRI स्कैनर और EEG जैसे वैज्ञानिक उपकरणों के साथ अनुभवजन्य रूप से सिद्ध किया गया है।

ध्यान के वैज्ञानिक लाभ

ध्यान पर हाल ही में हुए अनुसंधान हमें बताते हैं कि ध्यान के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य लाभ सत्यापित होकर नए आयाम प्रस्तुत कर रहे हैं

रक्तचाप कम करता है

ध्यान करने से रक्तचाप कम होता है, सूजन कम होती है, सर्कैडियन लय नियमित होती है और ग्लूकोज चयापचय स्थिर होता है। दो समूहो पर एक अध्ययन में पाया गया कि आठ सप्ताह तक ध्यान करने से नाइट्रिक ऑक्साइड के स्तर में वृद्धि हुई - वह अणु जो रक्तचाप को नियंत्रण में रखने में मदद करता है - जबकि जिस समूह ने ध्यान नहीं किया था का स्तर वही रहा।

ध्यान का यह लाभ संभावित रूप से जीवन रक्षक है, क्योंकि उच्च रक्तचाप दुनिया में मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। अपने रक्तचाप को कम करके आप दिल के दौरे या स्ट्रोक से मृत्यु के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

खुशी में सुधार करता है

वैज्ञानिक अध्ययनों ने स्थापित किया है कि खुशी का सबसे बड़ा कारण ध्यान ही है। ध्यान हमें वर्तमान में लाता है और अपनी प्रत्येक गतिविधि के प्रति जागरूक करता है, ध्यान हमारे मन को प्रशिक्षित करता है। दूसरी ओर, मन-भटकना, खुशी के घटते स्तरों से जुड़ा हुआ है। यह जांचने के लिए एक अध्ययन किया गया कि क्या ध्यान वास्तव में मन-भटकने को कम करता है और इसलिए समग्र खुशी बढ़ाता है। परिणामों से पता चला कि मन-भटकने के लिए जिम्मेदार मस्तिष्क के हिस्से के भीतर गतिविधि को काफी कम कर दिया, जबकि जिन्होंने ध्यान नहीं किया था उसमे वह अपरिवर्तित रहा। ध्यान करने से न केवल ध्यान के दौरान मन की भटकन कम होती है, बल्कि यदि कोई नियमित ध्यान का अभ्यास करता है तो इन प्रभावों को बनाए रखा जा सकता है और मजबूत किया जा सकता है।

अवसाद, तनाव और चिंता के लक्षणों को कम करता है

अध्ययन बताते है कि कैसे ध्यान तनाव और चिंता को कम कर सकता है, जिससे अवसाद कम होता है। दो प्राथमिक मस्तिष्क क्षेत्र जिन्हें न्यूरोसाइंटिस्ट अवसाद से जोड़ते हैं, वे हैं औसत दर्जे का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (मी-सेंटर) और एमिग्डाला (डर का केंद्र)। औसत दर्जे का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स तनाव और चिंता पर प्रतिक्रिया करता है, जो परिणामस्वरूप एमिग्डाला को तनाव हार्मोन कोर्टिसोल जारी करने का संकेत देता है। ध्यान तनाव और चिंता के प्रति आपकी प्रतिक्रिया को कम करके इस संबंध को तोड़ता है, जो फिर एमिग्डाला को कम कोर्टिसोल जारी करने का संकेत देता है, जिससे तनाव का स्तर नियंत्रण में रहता है।

ध्यान के अभ्यास को माध्यम से व्यवस्थित रूप से तनाव कम करने के लिए माना गया था, लेकिन बाद में यह साबित हो गया है कि यह अवसाद, चिंता, पुराने दर्द, कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और प्रतिरक्षा विकारों सहित कई पुरानी बीमारियों से लड़ने में भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

ध्यान और स्मृति में सुधार करता है

एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 2 सप्ताह के ध्यान के बाद विचलित करने वाले विचारों में कमी आई, साथ ही दिमाग के भटकने से जुड़े क्षेत्रों की गतिविधि में भी कमी आई। ध्यान अभ्यास से ध्यान और स्मृति में सुधार केवल ध्यान के दौरान या उसके तुरंत बाद के क्षणों तक ही सीमित नहीं है। नियमित ध्यान अभ्यास से, व्यक्ति पूरे दिन या पूरे सप्ताह इन लाभों को बनाए रख सकता है।

आत्म-नियंत्रण और व्यसनकारी आदतों में सुधार करता है

ध्यान धूम्रपान की लालसा को कैसे कम कर सकता है, इसकी जांच के माध्यम से, मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि ध्यान आत्म-नियंत्रण क्षमता में सुधार कर सकता है और इसलिए नशे की लत को कम कर सकता है। ध्यान के बाद, लत से संबंधित मस्तिष्क के क्षेत्रों में गतिविधि कम

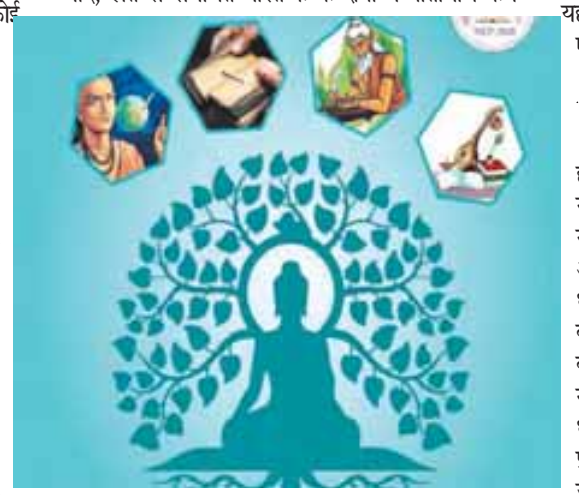

हो गई। कई व्यसन नकारात्मक भावनाओं और तनाव से संबंधित हैं, इसलिए ध्यान एक उपयोगी उपकरण है क्योंकि यह इन दो अनुभवों को विनियमित करने में भी मदद कर सकता है। इस अध्ययन का एक दिलचस्प पहलू यह था कि प्रतिभागियों को धूम्रपान छोड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी और न ही उनसे ऐसा करने के लिए कहा गया था। ध्यान के साथ उनकी धूम्रपान की आदतें और लालसा स्वाभाविक रूप से कम हो गई। कुछ प्रतिभागियों को तो यह भी पता नहीं चला कि वे लगातार ध्यान करने के बाद कम धूम्रपान कर रहे थे।

पुराने दर्द के लक्षणों को कम करता है

ध्यान का अभ्यास पुराने दर्द को कम करने से संबंधित मस्तिष्क क्षेत्रों का विस्तार कर सकता है। दिलचस्प बात यह है कि ध्यान के माध्यम से संवेदनशीलता को कम करने से प्रतिभागियों को दर्द को अनदेखा करने के लिए नहीं कहा जाता है, बल्कि दर्द के प्रति सचेत जागरूकता और खुलेपन को विकसित करके कम किया जाता है। यह काम इसलिए करता है क्योंकि बचने से चिंता बढ़ती है, जिससे दर्द और अन्य नकारात्मक स्वास्थ्य और मानसिक स्थितियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। इसलिए दर्द के प्रति सचेत खुलापन वास्तव में दर्द को कम कर सकता है।

क्रोनिक दर्द के लिए सहायता के रूप में ध्यान का उपयोग करने का एक लाभ यह है कि यह दर्द को दबाने का काम नहीं करता है - दर्द निवारक दवाओं से विपरीत यह दर्द के मूल तंत्रिका संबंधी कारणों को दूर करने का एक दीर्घकालिक समाधान है।

नींद में सुधार करता है

लोगों को कई कारणों से नींद न आने की समस्या होती है, लेकिन दो सामान्य कारण हैं, एक मानसिक स्वास्थ्य और दूसरा पुराना दर्द। ध्यान करने से मानसिक स्वास्थ्य में मदद मिलती है - खुशी बढ़ती है और तनाव और चिंता कम होती है एक बार फिर, कुछ स्थितियों में, ध्यान दवा से ज़्यादा उपयोगी हो सकता है क्योंकि यह केवल लक्षणों को दबाने के बजाय नींद न आने के मूल कारण को संशोधित करता है। चूँकि कई नींद की दवाओं से अत्यधिक नशे की लत भी हो सकती हैं, इसलिए ध्यान एक स्वस्थ विकल्प है जो कई अन्य स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है और प्रतिकूल दुष्प्रभावों के बिना पूरे जीवनकाल तक इसका अभ्यास किया जा सकता है।

नियमित ध्यान अभ्यास मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है

नियमित ध्यान अभ्यास से मस्तिष्क पर सबसे बड़ा प्रभाव न्यूरोप्लास्टिसिटी में वृद्धि है। न्यूरोप्लास्टिसिटी नए तंत्रिका मार्गों के निर्माण के माध्यम से हमारे मस्तिष्क की संरचना और संगठन को बदलने की क्षमता है। यह व्यायाम, आदत और ध्यान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, हार्वर्ड के पूर्व छात्र डॉ. रिची डेविडसन जैसे वैज्ञानिकों ने ध्यान और न्यूरोप्लास्टिसिटी के अध्ययन में अग्रणी भूमिका निभाई है। मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान अभ्यास के बीच संबंध को प्रदर्शित करते हुए, डेविडसन ने दिखाया है कि लोग खुशी और करुणा को प्रशिक्षित कौशल के रूप में सीख सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आप संगीत वाद्ययंत्र बजाना, खाना बनाना या बास्केटबॉल या गोल्फ जैसे खेल में सुधार करना सीख सकते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि ध्यान कार्यक्रमों के माध्यम से, लोग अपनी न्यूरोप्लास्टिसिटी बढ़ाते हैं, मस्तिष्क को स्वयं बदलते हैं जिससे वे खुद को, दूसरों को और दुनिया को देखने के तरीके को सकारात्मक रूप से बदल देते हैं।

ग्रे मैटर की वृद्धि करता है

कई अध्ययनों में पाया गया है कि नियमित ध्यान अभ्यास से मस्तिष्क के फ्रंटल कॉर्टेक्स में अधिक ग्रे मैटर बनता है , जो स्मृति और कार्यकारी निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार मस्तिष्क का क्षेत्र है। मस्तिष्क के इस हिस्से में अधिक ग्रे मैटर से स्मृति में वृद्धि होती है और भावनाओं, सामाजिक कौशल, आवेगों और मोटर कार्यों पर बेहतर नियंत्रण होता है । तंत्रिका वैज्ञानिकों ने यह भी पाया कि मस्तिष्क के अन्य क्षेत्रों में ग्रे मैटर का मोटा होना मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि से जुड़ा है तथा यह खुशी के स्तर का एक महत्वपूर्ण कारक है।

अमिग्डाला के आकार में कमी लाता है

एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि ध्यान करने से अमिग्डाला का आकार कम हो सकता है , जो मस्तिष्क का वह क्षेत्र है जो चिंता, भय और तनाव के लिए जिम्मेदार है।

मस्तिष्क का संरक्षण करता है

पहले बताए गए ग्रे मैटर की वृद्धि से मस्तिष्क के ऊतकों के संरक्षण में भी सुधार होता है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि लंबे समय तक ध्यान करने वालों का मस्तिष्क ध्यान न करने वालों की तुलना में 'बेहतर संरक्षित' था। जिन लोगों का मस्तिष्क 'उम्र को मात देने वाला' होता है, उन्हें बेहतर याददाश्त, मानसिक स्वास्थ्य, खुशी के स्तर और भावनाओं, सामाजिक कौशल, आवेगों और मोटर कार्यों पर बेहतर नियंत्रण का लाभ लंबे समय तक मिलता है ।

डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क (DMN) में गतिविधि कम हो जाती है

यह नेटवर्क - जिसे 'बंदर दिमाग' कहा जाता है - तब सक्रिय होता है जब हमारा मन भटकता है। वर्तमान क्षण से अलग होने की यह स्थिति दुख की ओर ले जाती है। न्यूरोप्लास्टिसिटी पर ध्यान के प्रभाव से आपके मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तन मन-भटकने को कम कर सकते हैं और ध्यान को बेहतर बना सकते हैं, जिससे समग्र खुशी और संतुष्टि में सुधार हो सकता है।

सरोकार

डॉ आर के पालीवाल

लेखक गांधीवादी विचारक हैं।

अम्बेडकर विवाद और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर हमारे देश की वर्तमान राजनीति के लिए एक ऐसा तुरुप का इक्का बन गया है जिसे अपने अपने दल के ताश की गड्डी में जोड़ने के लिए अमूमन हर दल लालायित है। संसद में डॉ अम्बेडकर को लेकर जिस तरह की तीखी नोंकझोंक हाल ही में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच हुई है वह इसी जद्दोजहद का नतीजा है जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। गृह मंत्री अमित शाह ने अपने तथाकथित विवादित बयान में एक बात तो सच कही है कि अंबेडकर का नाम राजनीतिक दलों ने फैशन की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। समस्या यह है कि वोट बटोरने के लिए अम्बेडकर के नाम का दुरुपयोग हाथी के दिखावटी दांत की तरह लगभग सभी दल एक दूसरे से ज्यादा करना चाहते हैं। अमित शाह के बचाव में उतरे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस विवाद को कांग्रेस की तरफ घुमाते हुए अम्बेडकर को कमतर दिखाने का सारा दोष कांग्रेस और प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के सिर मढ़ दिया। यह भी आजकल का फैशन है कि कोई सत्ता पक्ष की जरा सी आलोचना करे तो सत्ता पक्ष अपनी गलती स्वीकार कर उसे सुधारने की बजाय विपक्ष की कब्र से गड़े मुर्दे उखाड़ने लगता है। लेकिन जब कब्रगाह खोदे जाते हैं तो उसमें अपनों के गुनाहों के भूत भी सामने आते हैं। भाजपा यह भूल जाती है कि उनकी मातृ संस्थाएं हिंदू महासभा, आर एस एस और जनसंघ अम्बेडकर के हिंदू कोड बिल का किस हद तक विरोध करते थे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता विपक्ष राहुल गांधी का भी यह दायित्व बनता है कि वे भी सच्चाई का सामना दृढ़ता से करें और इतिहास को सही तरह से पेश कर बताएं कि अम्बेडकर से तत्कालीन कांग्रेस के किन नेताओं से किस तरह के संबंध थे।

आज जो लोग अम्बेडकर के नाम की माला जप रहे हैं और उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाने का श्रेय लेने के लिए एक दूसरे पर कीचड उछाल रहे हैं वे बहुत सारे तथ्य आम जनता से छिपाकर इसलिए झूठ बोल पा रहे हैं क्योंकि आम जनता को भी डॉ अम्बेडकर के जीवन और विचारों के बारे में वही आधी अधूरी जानकारी है जो राजनीतिक दल अपने अपने स्वार्थ के कारण उन्हें परोसते हैं और जो सूचनाएं स्वार्थी तत्वों द्वारा

अखबारों और सोशल मीडिया के माध्यम से जनता को परोसी जा रही है।जिन्हें डॉ अम्बेडकर के बारे में पूरी सच्चाई जाननी है उनके लिए डॉ अम्बेडकर के विपुल लेखन और समय समय पर दिए असंख्य भाषणों को पढ़ना जरूरी है। सार संक्षेप में कहें तो डॉ अम्बेडकर को जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बनाने और उनकी प्रतिभा की पहचान कर उन्हें संविधान निर्माण में महती भूमिका निभाने देने में महात्मा गांधी और राजकुमारी अमृत कौर का सबसे ज्यादा योगदान है। उनकी इस योजना में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्हीं के अनुरोध पर महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने एक सीट खाली कर डा अम्बेडकर को संविधान सभा में जगह दिलाई थी। यदि महात्मा गांधी के अनुरोध को सरदार वल्लभ भाई पटेल और जवाहर लाल नेहरू अनसुना कर देते तो डॉ अम्बेडकर को देश का कानून मंत्री बनने और संविधान निर्माण में ड्राफ्टिंग कमेटी का अध्यक्ष बनने का सौभाग्य ही नहीं मिलता और आजाद देश को उनकी सेवाओं से वंचित रहना पड़ता। जहां तक डॉ अम्बेडकर के मंत्रिमंडल से त्यागपत्र का संबंध है वे हिंदू कोड बिल पास करने के लिए इंतजार नहीं करना चाहते थे और जवाहर लाल नेहरू कट्टर हिंदुत्व के विरोध को शांत करने के लिए थोड़ा समय चाहते थे। अम्बेडकर को लगा कि जवाहर लाल नेहरू हिंदू महासभा और आर एस एस आदि के जबरदस्त विरोध के सामने झुक गए हैं। इसलिए उन्होंने अपनी बात मनती नहीं देख मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। यह सब घटनाएं विस्तार से मेरी किताब ÷अम्बेडकर जीवन और विचार÷ में दर्ज हैं, अधिक जानकारी के लिए अन्य ग्रंथों के साथ यह किताब भी पढ़ी जा सकती है।

विशेष- विश्व ध्यान दिवस

हिमालय सिद्ध अक्षर

(विख्यात अंतरराष्ट्रीय योग गुरु)

मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान ही उपचार

संयुक्त राष्ट्र ने ध्यान के वैश्विक महत्व को समझते हुए आधिकारिक तौर पर 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में मान्यता दी है। यह घोषणा व्यक्तिगत उपचार और सामूहिक शांति के लिए ध्यान के महत्व को दर्शाता है। संयुक्त राष्ट्र की यह घोषणा ध्यान के योगदान को स्वीकार करती है। ध्यान से जागरूकता और स्वमूल्यांकन का विकास होता है जिससे ग्रहणशक्ति, निष्पक्षता और वैश्विक कल्याण फलित होता है।

हमारी बढ़ती जटिल और तेज रफ्तार की दुनिया में, ध्यान एक परिवर्तनकारी अभ्यास के रूप में उभरा है जो मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए विशेष लाभ प्रदान करता है। विश्व स्तर पर ध्यान सभी को आकर्षित करता है एवं असाधारण क्षमता के लिए पहचाना जाता है। वैश्विक शांति और व्यक्तिगत कल्याण को बढ़ावा देने में ध्यान के सार्वभौमिक महत्व को स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में घोषणा करके ऐतिहासिक निर्णय लिया है। कोविड़ के बाद की दुनिया में, मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान विशेष रूप से प्रभावशाली साबित हुआ है। तनाव और चिंता से ग्रसित इस युग में, आधुनिक मनोवैज्ञानिक के लिए चुनौती बने हुए कई रोगों के लिए यह प्राचीन प्रथा एक शक्तिशाली उपचार प्रदान करती है। नियमित ध्यान अभ्यास से व्यक्तियों का तनाव कम होता है, नकारात्मक सोच का चक्र टूटता है,आंतरिक शांति को विकसित करने की क्षमता उजागर होती है। ध्यान पर हो रहे अनेक वैज्ञानिक रिसर्च उसके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरे प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

न्यूरोलॉजिकल अध्ययनों से पता चलता है कि लगातार ध्यान करने से मस्तिष्क सक्रिय होता है। मस्तिष्क में स्थित %अमिगडाला% की सक्रियता को कम कर सकता है। क्षेत्र जो भय और तनाव प्रतिक्रियाओं के लिए जिम्मेदार है। इस न्यूरोप्लास्टिसिटी का मतलब है कि चुनौतीपूर्ण स्थितियों में व्यक्ति का प्रतिक्रिया देने के तरीके को मौलिक रूप से बदला जा सत्ता है। डिप्रेशन मैनेजमेंट एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहां ध्यान उल्लेखनीय क्षमता दिखाता है। अध्ययनों से पता चला है कि ध्यान (माइंडफुलनेस मेडिटेशन) के द्वारा मध्यम स्तरीय डिप्रेशन का औषधीय उपचार जितना ही प्रभावी हो सकता है। अपने विचारों को गहराई से देखने की क्षमता विकसित होने के कारण ध्यान विनाशकारी मानसिक पैटर्न को तोड़ने में मदद करता है और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

ध्यान का वास्तविक लाभ, तनाव कम करने से बहुत अधिक हैं। वैज्ञानिक शोध से संकेत मिलता है कि नियमित ध्यान अभ्यास मस्तिष्क की संरचना को शारीरिक रूप से बदल सकता है, विशेष रूप से स्मृति, शिक्षा और भावनात्मक संतुलन से जुड़े क्षेत्रों में।ध्यान करने वाले व्यक्ति गहरी एकाग्रता, बेहतर रचनात्मकता और परिष्कृत समस्या-समाधान कौशल विकसित होने की पुष्टि करते हैं। व्यावसायिक लोग और छात्रों दोनों के लिए, ध्यान फोकस और मानसिक स्पष्टता में सुधार के लिए एक प्राकृतिक तरीका है। मन को एकाग्र रखने और व्याकुलता को कम करने के लिए प्रशिक्षित करके,व्यक्ति बेहतर कार्य कर सकते हैं। ध्यान का प्रभाव केवल मानसिक प्रक्रियाओं तक ही सीमित नहीं है; यह शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। कई चिकित्सा अध्ययनों ने विभिन्न शारीरिक प्रणालियों पर इसके सकारात्मक प्रभावों का प्रमाण दिया है। नियमित अभ्यास कर्ताओं को निम्न रक्तचाप, बेहतर प्रतिरोधक क्षमता और शारीरिक सूजन में कमी का अनुभव होता है। नियमित ध्यान अभ्यास से हृदय पर होने वाले प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। तनाव को कम करके और शिथिलता को बढ़ावा देकर, ध्यान हृदय पर प्रभाव डालने वाले कई कारकों को कम करने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, इस से श्वसन क्रिया में सुधार और समग्र शारीरिक लचीलेपन से भी जोड़ा गया है।

ज्ञान का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है बेहतर नींद का आना। अनिद्रा के इस युग में, ध्यान एक प्राकृतिक समाधान प्रदान करता है। तंत्रिका तंत्र को शांत करके और मानसिक तनाव को कम करके, यह व्यक्तियों को आसानी से निद्रा में जाने मैं और आरामदायक, बेहतर शयन का आनंद लेने में मदद करता है। गंभीर दर्द से

पीड़ित लोगों को ध्यान के माध्यम से महत्वपूर्ण राहत मिली है। मस्तिष्क दर्द संकेतों संसाधित करके,यह अभ्यास दर्द की धारणा को कम कर सकता है और दर्द की सहनशीलता में सुधार लाता है। यह पारंपरिक चिकित्सा के साथ मूल्यवान सहायक के रूप में कार्य करता है। ध्यान के सबसे प्रभावशाली लाभों में से एक इसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने की क्षमता है। नियमित अभ्यासकर्ताओं में बढ़ी हुई आत्म-जागरूकता, बेहतर सहानुभूति और अधिक परिष्कृत भावनात्मक संतुलन विकसित होता है। ये कौशल बेहतर रिश्तों, व्यक्तिगत और व्यावसायिक बातचीत के लिए अधिक दयालु दृष्टिकोण में तब्दील होते हैं।

ध्यान का असली सौंदर्य इसकी सुगमता में है। कई स्वास्थ्य प्रथाओं के विपरीत, ध्यान के लिए किसी विशेष उपकरण, महत्वपूर्ण वित्तीय निवेश या व्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। प्रतिदिन 10-15 मिनट भी सार्थक परिणाम दे सकते हैं। शुरुआत में विभिन्न तकनीकों का पता लगा सकते हैं, निर्देशित ध्यान से लेकर सरल साँस के सचेतन अभ्यास तक। ध्यान के विभिन्न प्रकार हैं। प्रत्येक अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। बंद आँखों ध्यान = यह आंतरिक-केंद्रित तकनीक बाहरी विकर्षणों को दूर करके आत्म-जागरूकता को गहरा करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। त्रिकोण ध्यान और त्रिनेत्र ध्यान जैसे अभ्यास अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक धारणा को बढ़ाते हुए विचारों और ऊर्जा में सामंजस्य स्थापित करने में मदद करते हैं। आंतरिक चेतना से जुड़कर, ये ध्यान अभ्यास मानसिक स्पष्टता, आत्म-जागरूकता और उन्नत अंतर्दृष्टि को बढ़ावा देते हैं। खुली आंखों का ध्यान = इस श्रेणी में, अभ्यासकर्ता सचेतनता विकसित करने और एकाग्रता में सुधार करने के लिए ,बाहरी वस्तुओं या उनके परिवेश पर ध्यान केंद्रित करते हैं। त्राटक जैसी तकनीक, जिसमें किसी लौ या चित्र को लगातार देखना शामिल है।इससे अटूट फोकस विकसित होता है और मन को शांत करने में मदद मिलती है। ये तकनीक व्यक्तियों को वर्तमान में रहना सिखाती हैं, जिससे दैनिक जीवन में जागरूकता की गहन भावना को बढ़ावा मिलता हैं। विचार-आधारित ध्यान = विचार ध्यान (थॉट मेडिटेशन) में मन को व्यक्तिगत लक्ष्यों और आकांक्षाओं के साथ एकाग्र किया जाता है।कृतज्ञता, विशिष्ट इरादों आदि पर ध्यान केंद्रित करके, ये ध्यान पद्धतियां सकारात्मकता, मानसिक स्पष्टता और एक निर्देशित मानसिकता को बढ़ावा देती हैं, जो व्यक्तिगत विकास और पूर्ति में सहायता करती हैं। मौन ध्यान = शांत ध्यान (मौन ध्यान) या विचारहीन ध्यान जैसी तकनीकों का उद्देश्य मन को शांत करना और आंतरिक शांति प्राप्त करना है। इन प्रथाओं में अक्सर सांसों का निरीक्षण करना या पूरी शांति से बैठना शामिल होता है, जिससे अभ्यासकर्ताओं को मानसिक विचारों के जाल से अलग होकर शांत स्थिति को अपनाने का अवसर मिलता है। पर्यावरण ध्यान = ये अनूठी तकनीक प्रकृति की अनंत शक्ति को ध्यान के अनुभव में एकीकृत करती हैं। चाहे पानी में डूबकर ध्यान करना हो, अग्नि की ऊर्जा के पास, या विशाल पहाड़ों की चोटी पर, ये अभ्यास प्राकृतिक तत्वों के साथ संबंध बढ़ाते हैं, ध्यान के प्रभाव को बढ़ाते हैं। प्रकृति की लय के साथ तालमेल बिठाकर, अभ्यासकर्ता संतुलन, शांति और आध्यात्मिक सद्भाव विकसित कर सकते हैं। ध्यान का प्रत्येक रूप अलग-अलग लाभ प्रदान करता है, जिससे व्यक्तियों को ऐसी तकनीक चुनने की अनुमति मिलती है जो उनके आध्यात्मिक लक्ष्यों और व्यक्तिगत कल्याण से मेल खाती हैं। साथ में, ये विधियाँ सचेतनता, आत्म-जागरूकता और समग्र विकास के लिए एक व्यापक मार्ग प्रदान करती हैं।

जैसे-जैसे हमारी दुनिया तेजी से जटिल और परस्पर संबंधित होती जा रही है, ध्यान का अभ्यास आधुनिक जीवन की मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा है। विश्व ध्यान दिवस को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता, इस परिवर्तनकारी अभ्यास के वैश्विक महत्व को दर्शाती है, जो संस्कृतियों और समुदायों में सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने की इसकी क्षमता पर जोर देती है।

अभी वाहन चालकों को और कुछ समय करना पड़ेगा इंतजार

बरेठा घाट फोरलेन के लिए राशि मंजूर, लेकिन अड़चने बरकरार

संजय द्विवेदी, बैतूल। बैतूल से भोपाल तक का सफर आसान होने की राह देख रहे वाहन चालकों को अभी और इंतजार करना पड़ेगा। दरअसल बरेठा घाट के लिए केन्द्र सरकार से राशि तो स्वीकृत हो गई है, लेकिन कुछ अड़चनों की वजह से टेंडर फाइनल नहीं हो सका है। जिसका कारण यह है कि बैतूल से इटारसी के बीच 20 किलोमीटर के क्षेत्र में सडक़ निर्माण कार्य पर हाईकोर्ट की रोक है। नागपुर (महाराष्ट्र) के एक एनजीओ ने टाइगर कॉरिडोर और बाघ मूवमेंट होने के कारण इस 20 किमी में निर्माण कार्य नहीं किए जाने पर स्टे लेकर रखा है। जब तक यह स्टे नहीं हटता, निर्माण की शुरूआत होना संभव नहीं है। दरअसल नागपुर-भोपाल जैसी दो बड़े महानगरों को जोड़ने वाले नेशनल हाईवे पर अब तक अवरोध बैतूल जिले में स्थित बरेठा घाट बचा है। बता दे कि भोपाल और नागपुर के बीच आवागमन को सुगम और तेज करने के लिए वैसे तो कई साल पहले बैतूल से नागपुर और बैतूल से भोपाल के लिए फोरलेन नेशनल हाईवे को एक साथ मंजूरी मिली थी। इसमें से बैतूल से नागपुर तक 173.3 किलोमीटर लंबे नेशनल हाईवे (एनएच-47) बहुत पहले बन कर तैयार हो चुकाहै। बैतूल-नागपुर के बीच का सफर अब कम समय में और आसानी से तय हो जाता है। इसके विपरीत बैतूल से भोपाल तक 178.6 किलोमीटर लंबा नेशनल हाईवे (एनएच-46) आज तक भी पूरा नहीं हो सका है। पहले इस काम को कर रही कंपनी की लेटलतीफी के चलते उसे टर्मिनेट कर दिया गया। इसके बाद दो हिस्सों बैतूल से इटारसी और इटारसी से भोपाल तक यह काम दो कंपनियों को दिया गया।

बैतूल वाला हिस्सा फिर पिछड़ा- जानकार बताते है कि इटारसी-भोपाल वाला सेक्शन तो काफी पहले पूरा हो चुका है, लेकिन बैतूल-इटारसी सेक्शन में सुस्त रफ्तार से काम चलता रहा। बैतूल-भोपाल के बीच के 2 घाट सेक्शन भोपाल-इटारसी के बीच बुदनी घाट (रातापानी वाइल्ड लाइफ रिजर्व एरिया) और बैतूल इटारसी के बीच स्थित बरेठा घाट (सतपुड़ा टाइगर वाइल्ड लाइफ रिजर्व एरिया) इन घाट सेक्शनों में बुदनी घाट सेक्शन के काम को पहले मंजूरी मिल चुकी थी और काम भी शुरू हो चुका था। बुदनी घाट का काम पूरा होने को हैं। वहां कुछ हिस्से में नई बनी सडक़ से वाहनों की आवाजाही भी शुरू हो चुकी है। जल्द ही पूरा बुदनी घाट क्लियर हो जाएगा और वहां से तेज रफ्तार से सफर हो सकेगा। लेकिन बरेठा घाट सेक्शन का काम अभी भी शुरू नहीं हो पाया है।

आए दिन लगते रहता है यहां जाम- इस पूरे हाईवे पर अब तक केवल बैतूल जिले में स्थित बरेठा घाट ही बचा हुआ था। इस हिस्से के फोरलेन में तब्दील नहीं होने से इस मात्र 4 किलोमीटर के हिस्से से आवाजाही में खासी परेशानी होती है। आए दिन यहां हादसे होते रहते हैं वहीं ट्रकों के पलटने से घंटों तक जाम लगना भी यहां आम बात है। यही कारण है कि बरेठा घाट अभी तक वाहन चालकों के लिए दुखदायी बना हुआ है। लेकिन हाईकोर्ट के स्टे की वजह से काम शुरू नहीं हो पाया है। जबकि अभी बरेठा घाट के हालात यह है कि यहां घाट सेक्शन की सडक़ की हालत भी काफी बदतर हो गई है। जिसके कारण वाहनों के आवागमन के दौरान दिक्कत होती है। सबसे ज्यादा परेशानी तब उठानी पड़ती है, जब कोई बड़ा वाहन घाट सेक्शन में पलट जाये और लंबा जाम लगने से लोगों को घंटो जाम में फंसे रहना पड़ता है।

इनका कहना -

हमें वन विभाग से एनओसी तो मिल चुकी है, लेकिन हाईकोर्ट के स्टे की वजह से टेंडर फाइनल नहीं हो पा रहे है। जैसे ही हाईकोर्ट से स्टे हटता है, टेंडर फाइनल कर निर्माण कार्य शुरू कर दिया जायेगा।

- मनीष मीणा,
प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एन.एच.ए.आई.

6 मार्च से शुरू होंगी छोटी कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाएं, पहली और दूसरी के छात्रों का मौखिक मूल्यांकन

तीसरी-चौथी की परीक्षाएं 6 मार्च से शुरू होंगी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के सरकारी स्कूलों की तीसरी, चौथी, छठी और सातवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा छह मार्च से आयोजित की जाएंगी। राज्य शिक्षा केंद्र ने इसकी समय-सारिणी घोषित कर दिया है। तीसरी व चौथी कक्षा की परीक्षाएं छह से 11 मार्च तक और छठी व सातवीं की परीक्षाएं छह से 12 मार्च तक आयोजित की जाएंगी।

इस समय सारिणी के अनुसार परीक्षाओं की समय अवधि ढाई घंटे की रहेगी। परीक्षा दोपहर दो बजे से शाम 4.30 बजे तक चलेगी। छह से 12 मार्च के बीच स्थानीय अवकाश होने पर भी ये परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी।

पहली व दूसरी कक्षा की नहीं होगी परीक्षा

सभी सरकारी स्कूलों में पहली व दूसरी कक्षा में परीक्षा नहीं ली जाएगी। इनका आकलन अभ्यास पुस्तिका के माध्यम से किया जाएगा। साथ ही गतिविधि आधारित व मौखिक मूल्यांकन होगा। इसमें हिंदी, अंग्रेजी व गणित विषय में सीखने की क्षमता के स्तर का परीक्षण होगा।

तीन भाषाएं जरूरी, सावधानी रखने को कहा

प्राचार्यों से कहा गया है कि परीक्षा का आवेदन पत्र भरते समय भाषा चयन को लेकर विद्यार्थियों से चर्चा कर लें। तीसरी व चौथी कक्षा में अतिरिक्त भाषा वैकल्पिक है। प्रथम भाषा के रूप में हिंदी, उर्दू या मराठी का चयन करने पर द्वितीय भाषा अंग्रेजी लेनी होगी। वहीं प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेजी का चयन करने पर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का चयन करना अनिवार्य होगा। वहीं छठी व सातवीं कक्षा में अगर कोई विद्यार्थी प्रथम भाषा के रूप में उर्दू या मराठी का चयन करता है तो उसे द्वितीय भाषा के तौर पर अंग्रेजी और तृतीय भाषा के रूप में हिंदी का चयन करना अनिवार्य होगा। वहीं प्रथम भाषा के रूप में अंग्रेजी का चयन करने पर द्वितीय भाषा हिंदी और तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत, उर्दू या मराठी भाषा का चयन करना अनिवार्य होगा।

बैतूल फुटबॉल संघ के पदाधिकारी रमेश भाटिया का इस्तीफा, वजह अज्ञात

बैतूल। जिला फुटबॉल संघ के पदाधिकारी और वरिष्ठ खिलाड़ी रमेश भाटिया ने फुटबॉल संघ में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है। रमेश भाटिया ने अपने त्यागपत्र में लिखा कि यदि वे संघ में किसी भी पद पर आसीन हैं, तो उनका त्यागपत्र तुरंत स्वीकृत किया जाए। उनके इस्तीफे से खेल जगत में हलचल मच गई है और लोग उनके इस फैसले के पीछे की वजह जानने को उत्सुक हैं। भाटिया ने अपने त्यागपत्र में जिला फुटबॉल संघ के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल की सराहना करते हुए लिखा कि उनके मार्गदर्शन में बैतूल की फुटबॉल ने कई ऊंचाईयां छुई हैं, जिससे सभी खिलाडिय़ों और खेल प्रेमियों को गर्व महसूस होता है। हालांकि, उन्होंने अपने इस्तीफे की कोई स्पष्ट वजह नहीं बताई है। भाटिया ने अपने त्यागपत्र में यह भी कहा कि वे भविष्य में खेलों के लिए संघ के साथ मिलकर काम करते रहेंगे। भाटिया के इस अप्रत्याशित कदम से फुटबॉल संघ में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। उनके इस्तीफे के पीछे का कारण सामने आने का इंतजार सभी को है।

महावीर इंटरनेशनल द्वारा आयोजित सतरंगी मेला और प्रदर्शनी आज से शुरू

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल संकल्प बैतूल टीम द्वारा महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से हर वर्ष आयोजित होने वाला सतरंगी मेला और प्रदर्शनी आज से खुशबू लॉन कालेज रोड में प्रारंभ हो गया है। यह दो दिवसीय आयोजन 21 और 22 दिसंबर को आयोजित किया जा रहा है।

संस्था की मीडिया प्रभारी वंदना पगारिया ने बताया कि इस मेले का मुख्य उद्देश्य महिला उद्यमियों को एक सशक्त मंच प्रदान करना है, जिससे वे अपने व्यवसाय को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर बन सकें और अपने परिवार को आर्थिक सहयोग दे सकें। इस आयोजन में हर वर्ष बैतूल सहित अन्य शहरों से 40-45 महिला उद्यमी हिस्सा लेती हैं और अपने व्यवसायिक क्षेत्र में प्रगति करती हैं। इस बार मेले में साड़ी, सलवार सूट, कोट-सूट, बच्चों और युवाओं के कपड़े, इमिटेशन और सिल्वर ज्वेलरी, हस्तशिल्प, घर सजाने की सामग्री, चादर, कंबल, और स्वादिष्ट व्यंजनों के स्टॉल लगाए गए हैं। साथ ही मनोरंजन खेलों और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया है। महावीर इंटरनेशनल संकल्प बैतूल ने सभी नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे इस मेले में उपस्थित होकर महिला उद्यमियों का उत्साहवर्धन करें और उनके व्यवसाय को बढ़ावा दें।

किसान पर तीन भालुओं ने हमला किया, गंभीर घायल

बैतूल। आठनेर ब्लाक के मोरनढाना गांव में गुरुवार शाम एक किसान पर तीन भालुओं ने हमला कर दिया। हादसे में किसान गंभीर घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है। जानकारी के मुताबिक किसान रमेश (37) शाम करीब सात बजे अपने खेत में बंदरों को भगा रहा था। इस दौरान तीन भालुओं ने किसान के पैर पकड़ लिए और अपने नुकीले पंजों से सिर पर वार करने लगे। घबराए किसान ने हिम्मत दिखाते हुए भालुओं के सिर पर मुक्के मारे। इसके बाद भालू खेत में भाग गए। किसान पर भालुओं के हमले की जानकारी एक स्थानीय चरवाहा ने वन विभाग को दी। इसके बाद वन विभाग ने घायल को भैसदेही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। किसान की गंभीर स्थिति के उसे देर रात जिला अस्पताल बैतूल रेफर कर किया गया है।

धारदार हथियार से युवक की हत्या, पुलिस कर रही जांच

बैतूल। सांइखेड़ा थाना क्षेत्र के ग्राम खेड़ीकोर्ट में युवक की हत्या कर दी गई। उसके शरीर पर 6 से ज्यादा निशान हैं। खेड़ीकोर्ट का रहने वाला विश्वनाथ करोले (35) गुरुवार रात 11 बजे साइखेड़ा से दो मिस्त्रियों को छोडऩे सांईखेड़ा गया था। देर तक नहीं लौटा, तो परिवार वालों ने उसे तलाश किया। उसका शव रात में ही घर से एक किलोमीटर दूर झाडियों में मिला। सूचना पर पहुंचने पुलिस ने शव को पीएम हाउस भिजवाया। शुक्रवार दोपहर पोस्टमार्टम करवाया गया। थाना प्रभारी राजन उइके ने बताया कि मृतक के शरीर पर धारदार हथियारों के निशान हैं। ऐसे में हत्या से इनकार नहीं किया जा सकता। मृतक के भाई नीलकंठ करौले ने बताया कि विश्वनाथ के शरीर पर धारदार हथियार के 6 ज्यादा घाव हैं। मामला रंजिश का लग रहा है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

आयकर कार्यालय में आयोजित हुआ सेमीनार

विवाद से विश्वास योजना की दी जानकारी

बैतूल। भारत सरकार द्वारा आयकर अधिनियम से संबंधित भारी संख्या में लंबित अपीलों के त्वरित निपटान के लिए वित्त विधेयक 2/2024 के चैप्टर-फोर में घोषित विवाद से विश्वास योजना 01 अक्टूबर से लागू हो गई है। इस योजना की जानकारी देने के लिए आयकर कार्यालय बैतूल द्वारा सेमिनार आयोजित किया गया। जिसमें आयकर विभाग से प्रधान आयकर आयुक्त-1 भोपाल और अतिरिक्त आयकर आयुक्त-1 परिक्षेत्र-1 भोपाल, आयकर अधिकारी (तकनीकी) और आयकर अधिकारी बैतूल शामिल हुए। आयकर अधिकारी बैतूल ने विवाद से विश्वास योजना 2024 के प्रावधानों को बताया और इस योजना का लाभ कौन ले सकते है, योजना के तहत आवेदन करने से क्या लाभ मिलेंगे, ये योजना किस तरह से लागू होगी, इसकी टाइमलाइन क्या रहेगी इसके बारे में भी जानकारी दी। आयकर अधिकारी ने बताया कि विवाद से विश्वास योजना 2024 में वे अपीलार्थी सेटलमेंट के लिए आवेदन दे सकते है, जिनकी अपील किसी भी फोरम पर 22 जुलाई 2024 को लंबित थी, उन्हें अपील में वर्णित विवादित आय पर केवल विवादित कर देना होगा। इसके बदले उन्हें आयकर अधिनियम 1961 के तहत निर्धारण आदेश में आरोपित ब्याज, लगने वाले ब्याज, पेनल्टी द्वारा आरोपित अमाउंट के साथ, इन मुद्दों पर संभावित अभियोजन से भी मुक्ति मिल सकेगी, यदि अपील पेनल्टी, ब्याज या फीस से संबंधित है तो अपीलार्थी को अपील द्वारा आरोपित अमाउंट का केवल 25 फीसदी ही देना होगा। इस प्रकार लगभग कुल टैक्स एरियर का एक चौथाई भुगतान करके करदाता को पूरे टैक्स एरियर से निजात मिल जाएगी। योजना की खासियत यह भी है कि जिस करदाता को फॉर्म 4 जारी हो जाएगा। उसे किसी भी कानून में चैलेंज नहीं किया जा सकता अर्थात वह आदेश फाइनल होगा। आयकर विभाग के इस कार्यक्रम में चार्टर्ड अकाउन्टैंट एसोसिएशन, टैक्स बार एसोसिएशन, विभिन्न व्यापारी संघ बैतूल, के पदाधिकारियों, सदस्यों तथा स्थानीय व्यापारियों ने हिस्सा लिया।

भडूस स्कूल में कैरियर काउंसलिंग का आयोजन

बैतूल। शासकीय उमावि भडूस में करियर काउंसलर श्रीमती ज्योति तिवारी द्वारा बच्चों की करियर काउंसलिंग की गई। श्रीमती तिवारी ने शाला में विधार्थियों को कैरियर योजना, कौशल आधारित रोजगार के महत्व, उच्च शिक्षा के विकल्प, विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक

प्रक्रिया, प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी, छात्र उद्यमिता के बारे में संवाद, उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता के विकल्प, स्थानीय रोजगार के अवसर के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रेजेंटेशन एवं ब्रोसर के माध्यम से काउंसलिंग सत्र को संवेदात्मक और रोचक बनाया गया। बच्चों को कक्षा 10वी, 12वी, उच्च शिक्षा के बाद सफलता के लिए मार्गदर्शन तथा विभिन्न सरकारी मेधावी विद्यार्थी स्कॉलरशिप योजनाओं की जानकारी दी गई।

नवांकुर संस्थाओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

अतिथियों ने प्रतिभागियों को वितरित किए प्रमाण-पत्र

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद बैतूल की नवांकुर संस्थाओं का भारत-भारती आवासीय परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुक्रवार को समापन किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम सत्र में सोशल ऑडिट विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए सरस्वती शिशु मंदिर बैतूल से व्याख्याता वाणिज्य विभाग से भूपेंद्र पवार ने सोशल ऑडिट के विभिन्न आयामों को संस्थाओं के प्रतिनिधियों के समक्ष रखा। संभाग समन्वयक नर्मदापुरम कौशलेश तिवारी ने प्रशिक्षण के विभिन्न आयामों एवं सामाजिक सरोकार के कार्य करने के लिए कैसे-

कैसे कार्य किये जाते है, सेवाभावी होना, स्वैच्छिकता का भाव, आदि अनेक विषयों पर विचार रखे। नमन सेवा समिति बैतूल के डायरेक्टर श्री चौधरी ने भी संस्थाओं की क्षमता वृद्धि के लिए अनेक सुझाव दिए। भूतपूर्व स्वतंत्र निदेशक राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड एवं जिले के प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं अध्यक्ष सक्षम संस्था सुनील हिरानी ने समिति के विभिन्न अधिनियमों के तहत किस तरह पंजीयन कराया जाना चाहिए, कौन-कौन से पंजीयन आवश्यक होते हैं। संस्था को कौन-कौन से छोटे-छोटे दस्तावेजीकरण करना आवश्यक होता हैं। दस्तावेजीकरण करते समय क्या-क्या सावधानियां रखनी चाहिए। बिल वाउचर कैसे बनाना, विभिन्न तरह के रजिस्टर बनाना आदि विषयों विस्तार बताया। समापन सत्र के उपरांत सभी अतिथियों ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। अंत में जिला समन्वयक प्रिया चौधरी ने प्रशिक्षण में उपस्थित अतिथियों एवं विभिन्न प्रिंट मीडिया के पत्रकार साथियों और उपस्थित सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

पुलिस और संगठनों ने पकड़ा गोवंश से भरा कंटेनर, 33 गोवंश तस्करों के चंगुल से मुक्त

ट्रक में पंखे भी लगाए थे ताकि गोवंश को जीवित महाराष्ट्र पहुंचाया जा सके

बैतूल। गोवंश तस्करी के एक बड़े प्रयास को पुलिस और हिंदू संगठनों की सक्रियता से नाकाम कर दिया गया। राष्ट्रीय हिंदू सेना, बजरंग दल और गौ कांति दल के सदस्यों ने पुलिस के साथ मिलकर एक कंटेनर ट्रक पकड़ा, जिसमें 33 गोवंश क्रूरता से बांधकर महाराष्ट्र के कत्लखाने ले जाए जा रहे थे। यह घटना बैतूल से मुलताई होते हुए नेशनल हाइवे पर घटी, जहां पुलिस और संगठनों की मुस्तैदी ने तस्करों की साजिश को विफल कर दिया। राष्ट्रीय हिंदू सेना प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि भोपाल की ओर से एक बड़ा कंटेनर ट्रक (क्रमांक आरजे 51 जीए 3521) गोवंश को भरकर महाराष्ट्र के कत्लखाने ले जा रहा है। सूचना मिलते ही दीपक मालवीय ने पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झारिया को जानकारी दी और संगठन के कार्यकर्ताओं को तुरंत सक्रिय किया। तस्करों ने बैतूल से मुलताई तक पुलिस और संगठनों के पीछा करने के बावजूद ट्रक को तेजी से भगाने का प्रयास किया। गौ कांति दल के जिला संयोजक दिनेश कालभोर ने बताया कि कई किलोमीटर तक पीछा करने के बाद चिचंडा गांव के पास ट्रक को रोका गया। हालांकि,

ट्रक चालक और कंडक्टर पुलिस और संगठन के सदस्यों को देखकर फरार होने में सफल रहे। बजरंग दल नगर संयोजक भूपेश साहू ने बताया कि ट्रक को अंदर से पूरी तरह सील किया गया था और गोवंश को रस्सियों से बांधकर क्रूरतापूर्वक रखा गया था। तस्करों ने ट्रक में पंखे भी लगाए थे ताकि गोवंश को जीवित महाराष्ट्र पहुंचाया जा सके। गिनती करने पर ट्रक में 33 गोवंश मिले। इन सभी को सुरक्षित माँ ताप्ती गौशाला भेज दिया गया, जहां उनका उपचार किया जा रहा है।

इस कार्रवाई में मुलताई पुलिस की टीम, जिसमें टीआई राजेश सातनकर, एसआई अमित पंवार, आरक्षक सेवाप्रसाद पंवार, विशाल चौरसिया, प्रिंस और महेश नगदे शामिल थे। कार्यवाही में हिंदू संगठनों के प्रमुख पदाधिकारी, जिनमें तहसील गौरक्षा प्रमुख आशीष यादव, तहसील उपाध्यक्ष स्वप्निल छोटू पंवार, समाजसेवी गोलू उघड़े, श्याम कलोनिया, प्रखंड अध्यक्ष राजा कुंभारे, प्रदीप पंवार, छोटू पाटिल और हिमांशु शामिल रहे। तस्करों के खिलाफ मुलताई थाने में एफआईआर दर्ज कर ली गई है, और पुलिस फरार तस्करों की तलाश में जुटी हुई है।

कलयुग में प्रज्ञा पुराण प्रासंगिक है: पं. धनराज धोटे

बैतूल। आज के काल में प्रज्ञा पुराण की आवश्यकता है। त्रेता में रावण के अत्याचारों से मुक्ति के लिए भगवान ने रामायण की रचना की। द्वापर में धृतराष्ट्र व दुर्योधन जैसे पापियों की शक्ति क्षीण करने के लिए गीता के उपदेश की आवश्यकता थी इससे भी काम न चला तो भगवान को महाभारत के माध्यम से दुष्टों का संहार करना पड़ा। आज दुर्बुद्धि दूर करने के लिए कलयुग में पावन प्रज्ञा पुराण के माध्यम से सद्बुद्धि की स्थापना की आवश्यकता है। ये विचार खंजनपुर स्थित गायत्री कालोनी, दुर्गा वार्ड में गायत्री परिवार द्वारा आयोजित 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ और प्रज्ञा पुराण कथा में मुख्य टोली नायक पं. धनराज

धोटे ने व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि गायत्री कामधेनु है, गायत्री कल्पवृक्ष है गायत्री पारस है। गायत्री की साधना करने से जीवन मे सब कुछ मिलता है। चार दिवसीय इस आयोजन की शुरूआत विराट कलश यात्रा से हुई। इस अवसर पर वरिष्ठ परिजन डॉ.शैला मुले के हाथों से यजमानों को गुरुदेव का साहित्य भेंट किया गया। सभी उपस्थित साधकों को गायत्री चालीसा वितरित की गई। द्वितीय दिवस देव स्थापना के साथ महायज्ञ में आहुतियां दी गई। दोपहर में प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से यज्ञाचार्य धोटे द्वारा गुरुदेव के विचारों से लोगो को परिचय कराया। मुख्य यजमानो के रूप में नवनीत मालवीय, राजीव मिश्रा, महेश पवार, संतोष भलावी, सत्येंद्र बघेल, माखन पवार ने यज्ञ में हिस्सा लिया। महेश पवार ने बताया कि संस्कारों की परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से इस यज्ञ आयोजन में समस्त संस्कार निःशुल्क कराए जाएंगे।

बैतूल नपा सीएमओ श्री भदौरिया को मुलताई का अतिरिक्त प्रभार

बैतूल। नगरपालिका बैतूल में सीएमओ के पद पर पदस्थ रहे ओमपाल सिंह भदौरिया को मुलताई मुलताई नगरपालिका का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। वर्तमान में श्री भदौरिया जिला शहरी विकास अधिकरण के परियोजना के अधिकारी है। नगरीय प्रशासन एवं विकास नर्मदापुरम संभाग के संयुक्त संचालक सुरेश बेलिया ने आदेश जारी करते हुए मुलताई नगरपालिका में पदस्थ सीएमओ राजकुमार इवनाती का तबादला नगरपालिका परिषद पांढूर्णा कर दिया है। श्री इवनाती मुलताई से रिलीव भी हो गए है। उनकी जगह अब श्री भदौरिया को परियोजना अधिकारी के साथ-साथ मुलताई नगरपालिका का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। उन्होंने मुलताई का प्रभार भी ले लिया है।

भारत को विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में लाने के लिए म.प्र. प्रतिबद्ध : उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा

सिंहस्थ महापर्व आयोजन के लिए प्रावधान का अनुरोध, केन्द्रीय करों में राज्य की हिस्सेदारी 41 प्रतिशत को बढ़ाया जाये

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत को समग्र रूप से विकसित करने तथा विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी में लाने के लिए समर्पित और प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में कुशल वित्तीय प्रबंधन के परिणामस्वरूप प्रदेश राजस्व आधिक्य की स्थिति में है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने उज्जैन में 2028 में आयोजित होने वाले सिंहस्थ महापर्व की चर्चा करते हुए प्रदेश सरकार द्वारा सिंहस्थ क्षेत्र में सुनियोजित रूप से विकास व जन-सुविधाओं की व्यापक व्यवस्था के लिए आगामी बजट में 'सिंहस्थ' आयोजन के लिए विशेष प्रावधान का अनुरोध किया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन की अध्यक्षता में शुक्रवार को राजस्थान के जैसलमेर में राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों के साथ हुई प्री-बजट मीटिंग में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि विशेष पूंजीगत सहायता योजना के संबंध में आम जनता के जीवन-यापन में सकारात्मक परिवर्तन भी हो रहा है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में प्रदेश का कुल पूंजीगत व्यय रूपये 46 हजार 798 करोड़ था जो लगभग 23 प्रतिशत वृद्धि के साथ वर्ष 2023-24 में रूपये 57 हजार 348 करोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024-25 में लगभग रूपये 64 हजार 738 करोड़ का पूंजीगत व्यय अनुमानित है। वर्ष 2024-25 के लिए रूपये 6 हजार 187 करोड़ 73 लाख की राशि प्रदान करने के लिए केन्द्र सरकार को धन्यवाद दिया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने राज्य की ओर से बजट की तैयारी से संबंधित सुझाव देते हुए कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन के अंतर्गत वित्त

पोषित राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन, राष्ट्रीय विधवा पेंशन एंव राष्ट्रीय निःशक्त पेंशन योजनाओं में वित्त पोषण की वर्तमान व्यवस्था पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से 2024 के मध्य प्रतिवर्ष 0.29 प्रतिशत से लेकर 0.44 प्रतिशत तक की जीवन-प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। योजनान्तर्गत हितग्राहियों की वर्तमान पंजीबद्ध संख्या 24 लाख 14 हजार से बढ़कर 29 लाख 43 हजार होना अनुमानित है। केन्द्र सरकार द्वारा मात्र 15 लाख 75 हजार हितग्राहियों के मान से ही वित्त पोषण किए जाने से राज्य सरकार को अतिरिक्त व्यय वहन करना पड़ रहा है। वर्ष 2013-14 में योजना के हितग्राहियों की संख्या की अधिकतम सीमा के पुनरीक्षण पर विचार किया जाना चाहिए।

जल जीवन मिशन की शेष राशि जारी करने का आग्रह- जल जीवन मिशन योजना के लिये उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि केन्द्र से मिशन की दूसरी किश्त की द्वितीय व तृतीय ट्रेंच की राशि रूपये 1 हज़ार 422 करोड़ की राशि प्राप्त नहीं होने से राज्य सरकार ने स्वयं के स्त्रोतों से योजनाओं के कार्यों को जारी रखा है। वर्ष 2024-25 में इन कार्यों के लिए रूपये 17 हज़ार करोड़ की आवश्यकता अनुमानित है, जिसमें केन्द्र की सहभागिता के अनुसार प्रदेश को रूपये 8 हज़ार 500 करोड़ की राशि भारत सरकार से अपेक्षित है। उन्होंने केन्द्रांश के लिए रूपये 4 हज़ार 456 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान करने और द्वितीय किश्त की शेष राशि रूपये 1 हज़ार 422 करोड़ उपलब्ध कराने का आग्रह किया।

खाद्यान्न उपार्जन की लागत के व्ययों की प्रतिपूर्ति दरों का पुनर्निर्धारण- उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि उपार्जन में विभिन्न मदों जैसे निराश्रित शुल्क, मण्डी लेबर व्यय, परिवहन व्यय, सोसायटी को कमीशन, ब्याज, भण्डारण व्यय, मिलर्स को प्रोत्साहन, बारदाना लागत आदि में किए जा रहे व्ययों तथा केन्द्र द्वारा निर्धारित दरों में अन्तर है। केन्द्र के स्तर पर दरों का पुनरीक्षण नहीं होने से सभी मदों में राज्य सरकार पर अतिरिक्त व्यय भार आ गया है। इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र से दरों के शीघ्र पुनरीक्षण अनुरोध है।

ग्रामीण सड़कों के निर्माण, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना एवं स्वच्छ भारत मिशन जैसे जन-सुविधाओं के कार्यक्रमों में मध्यप्रदेश के निरन्तर सराहनीय प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए उपमुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने ग्रामीण सड़कों की लम्बाई के मान से सड़कों के संधारण व रख-रखाव के लिए 60 व 40 प्रतिशत के अनुपात में केन्द्र से वित्तीय सहभागिता का अनुरोध किया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना में केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित मजदूरी दर, कृषि श्रमिकों के लिए अधिसूचित मजदूरी दर से कम है। इसके परिणामस्वरूप मजदूरी नियोजन में कमी आई है। केन्द्र सरकार से प्रशासनिक मद में व्यय की 6 प्रतिशत राशि की सीमा को बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के अनुसूचित जनजाति वर्ग के उत्थान एवं जीवन सुधार के मद्देनजर एक वर्ष में 100 दिवस के रोजगार की बजाय 150 दिवस के रोजगार की गारण्टी का प्रावधान करने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों और भू-जल स्तर की गिरावट वाले क्षेत्रों में जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए वाटर शेड विकास परियोजनाओं के विकास के लिए बजट में विशेष रूप से प्रावधान करने का अनुरोध किया। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने मध्यप्रदेश द्वारा आर्थिक दायित्वों के सराहनीय निर्वहन का उल्लेख करते हुए केन्द्रीय करों में राज्य सरकार की वर्तमान हिस्सेदारी 41 प्रतिशत को बढ़ाये जाने की बात कही।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में NSUI ने उठाई दलित समाज से कुलगुरु बनाने की मांग

भोपाल। नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में दलित समाज से कुलगुरु बनाने की मांग की है। वर्तमान में देश व प्रदेश में भीमराव आंबेडकर जी के ऊपर काफी सियासत गरमाई हुई है, ऐसे में कांग्रेस के छात्र संगठन के द्वारा विश्वविद्यालय में दलित समाज से कुलगुरु बनाने की मांग को दरकिनार नहीं किया जा सकता।

हस्ट्ठ प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष चौकसे ने वीडियो जारी कर कहा कि वर्तमान में देश व प्रदेश में भाजपा सरकार दलितों व बाबा साहब का अपमान कर रही है, देश के सबसे बड़े पत्रकारिता के विश्वविद्यालय में लगातार दलित छात्रों व दलित शिक्षकों का अपमान किया जा रहा है। इस कठिन समय में दलित समाज के साथ कांग्रेस और एनएसयूआई सदैव खड़ी रहेगी। हमारी मांग है कि इस भेदभाव को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय में दलित समाज से आने वाले योग्य व्यक्तित्व को कुलगुरु बनाया जाना चाहिए जिससे सामाजिक एकता का उदाहरण स्थापित हो सके। शुक्रवार को एनएसआई के प्रदेश सह सचिव अमन पठान ने देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ एवं माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के प्रभारी तनय शर्मा ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नाम पत्र भी लिखा है। प्रदेश सह सचिव अमन पठान ने कहा, सरकार लगातार पिछड़ों का अपमान करती आई है ऐसे में बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर जी के सम्मान में दलित समाज से कुलगुरु बनाना एक महत्वपूर्ण कदम होगा। हमें उम्मीद है कि उपराष्ट्रपति महोदय एवं मुख्यमंत्री महोदय हमारी जायज मांग पर ध्यान देंगे और बाबा साहब के सम्मान में उचित निर्णय लेंगे।

इस संबंध में, विश्वविद्यालय एनएसयूआई प्रभारी तनय शर्मा ने मुख्यमंत्री को पत्र में लिखा कि संविधान के शिल्पकार बाबा साहब आंबेडकर ने सर्व समाज को समानता दिलाने के उद्देश्य से संविधान को गढ़ा था। ऐसे में शैक्षणिक क्षेत्र में दलित समाज का नेतृत्व होना जरूरी है। यह निर्णय हमारे विश्वविद्यालय में सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया जा सकेगा।

शासकीय विद्यालयों में पर्याप्त विद्युत व्यवस्था के लिये दिये गये निर्देश

लोक शिक्षण संचालनालय ने जारी किया परिपत्र

भोपाल (नप्र)। शासकीय विद्यालयों की कक्षाओं में विद्युत व्यवस्था के संबंध में मिलने वाली शिकायतों को देखते हुए लोक शिक्षण संचालनालय ने जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिये है। निर्देशों मे कहा गया है कि सर्दी में ठंडी हवा से बचाव के लिये खिड़कियों को बंद करने पर कक्षाओं में पर्याप्त प्रकाश की आवश्यकता बढ़ जाती है। प्रकाश के अभाव में विद्यार्थियों को पढ़ाई के दौरान दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसमें सुधार के लिये कक्षाओं में आवश्यक प्रकाश की व्यवस्था की जायें।

प्रत्येक कक्षा में कम से कम 4 एलईडी ट्यूबलाईट की व्यवस्था की जाएं। प्रकाश व्यवस्था के लिये 7 हजार 125 हाई और हायर सेकण्डरी स्कूलों में प्रति विद्यालय के मान से 20 हजार रूपये की राशि सभी विकासखण्ड शिक्षा अधिकारियों को उपलब्ध कराई गई है। शाला प्रभारियों को प्रकाश व्यवस्था के साथ बिजली के स्विच बोर्ड और आंतरिक विद्युतीकरण व्यवस्था अन्तर्गत तार की मरम्मत के लिये भी कहा गया है। ऐसे शासकीय विद्यालयों में जहाँ विद्युतीकरण नहीं है, एमपीईबी से प्राक्लन प्राप्त कर स्वीकृति के लिये वरिष्ठ कार्यालय को भेजे जाएं। उक्त कार्य को प्राथमिकता दिये जाने के लिये भी कहा है।

दो लाख 11 हजार से अधिक किसानों से खरीदी गई 14 लाख मीट्रिक टन धान

भोपाल(नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक दो लाख 11 हजार 780 किसानों से 14 लाख 9 हजार 493 मीट्रिक टन धान की खरीदी उपार्जन केन्द्रों में हो चुकी है। धान की खरीदी के लिये 1358 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। धान का उपार्जन 20 जनवरी 2025 तक किया जायेगा। धान कॉमन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपये और धान ग्रेड-ए का 2320 रूपये है।

धान की खरीदी जिला पन्ना में 36,875, दमोह 26,655, सागर 5110, शहडोल 73,311, अनूपपुर 30,512, उमरिया 40,488, रीवा 1 लाख 61 हजार 640, सतना 1 लाख 57 हजार 85, सिंगरौली 56,394, सीधी 40,959, मऊगंज 39,672, मैहर 51,501, सीहोर 8682, रायसेन 11, 409, विदिशा 518, नर्मदापुरम 54,276, बैतूल 15,243, हरदा 129, कटनी 1 लाख 47 हजार 850, बालाघाट 1 लाख 82 हजार 287, मंडला 77,746, नरसिंहपुर 32,145, सिवनी 58,286, जबलपुर 89,045, डिंडोरी 8720, छिंदवाड़ा 2597, भिण्ड 207, शिवपुरी 92, अलीराजपुर 46 और झाबुआ जिले में 13 मीट्रिक टन की जा चुकी है।

अंतर्राष्ट्रीय टाइगर तस्कर ताशी शेरपा की जमानत निरस्त

भोपाल(नप्र)। स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश को मिली बढी सफलताएसटीएसएफ ने विगत 08 वर्षों से फरार अंतर्राष्ट्रीय टाइगर तस्कर ताशी शेरपा को भारत-नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) से 24 जनवरी 2024 को गिरफ्तार किया था। उक्त आरोपी मध्यप्रदेश के सतपुडा टाइगर रिजर्व,

नर्मदापुरम के अंतर्गत वन्यजीव टाइगर व पेंगोलिन के अवयवों के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अवैध व्यापार के गिरोह के सरगना है व विगत 08 वर्षों से फरार था।

ताशी शेरपा टाइगर तस्कर की जमानत याचिका कई बार विभिन्न न्यायालयों (मजिस्ट्रेट, सत्र न्यायालय व उच्च न्यायालय) द्वारा खारिज की जा चुकी है। इसके उपरांत उक्त आरोपी ने सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली के समक्ष जमानत याचिका दायर की थी, जिसकी विस्तृत सुनवाई उपरांत सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये जमानत याचिका निरस्त कर दी तथा न्यायालय मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नर्मदापुरम को जुलाई 2025 तक प्रकरण के निराकरण करने के निर्देश भी दिये।

इस प्रकरण में एसटीएसएफ ने कुल 29 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है जिनके विरूद्ध मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय नर्मदापुरम के द्वारा 05-05 वर्ष के सश्रम कारावास एवं कुल 7 लाख 10 हजार रूपये का अर्थदंड का आदेश पारित किया गया है एवं प्रकरण में 3 देशों के 7 अंतर्राष्ट्रीय तस्कर फरार है।

विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मध्यप्रदेश एक आधार स्तंभ बनने की क्षमता रखता है :अमिताभ कांत

तीन दिवसीय मध्यप्रदेश सिविल सर्विसेज मीट का उद्घाटन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने तीन दिवसीय मध्यप्रदेश सिविल सर्विसेज मीट का उद्घाटन शुक्रवार को किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित जी-20 इंडिया के शेरपा तथा नीति आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री अमिताभ कांत ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत 30 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहा है, ऐसे में मध्यप्रदेश की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। मध्यप्रदेश अपनी विशाल प्राकृतिक संपदा, रणनीतिक स्थिति और विकास की अपार संभावनाओं के साथ, विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक आधार स्तंभ बनने की क्षमता रखता है।

श्री अमिताभ कांत ने कहा कि मध्यप्रदेश को अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध वन्य जीवन और सांस्कृतिक विरासत का वरदान प्राप्त है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों, इसके विशाल राष्ट्रीय उद्यानों एवं टाइगर रिज़र्व के नेटवर्क के कारण, यह राज्य भारत का अग्रणी पर्यटन गंतव्य बना है। मध्यप्रदेश अपनी पर्यटन क्षमता से राजस्थान और केरल जैसे राज्यों को वैश्विक पर्यटन बाजार में कड़ी टक्कर दे रहा है।

श्री अमिताभ कांत ने कहा कि भारत की दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की विकास यात्रा तब ही पूरी होगी जब इसके राज्य भी सतत प्रगति करें। विकसित मध्यप्रदेश की यात्रा विकसित भारत के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह मेल खाती है। मध्यप्रदेश प्रगति, नवाचार और समावेशिता का आदर्श बनकर, भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरने में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है।

उद्घाटन सत्र के बाद 'नई-पुरानी बातें' विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया- उद्घाटन सत्र के बाद 'नई-पुरानी बातें' विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। पैनल चर्चा में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने प्रशासनिक सेवा में टीम वर्क को सबसे महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि अधिकारी को सुनने, पढ़ने, अनुभव लेने और आत्म-निरीक्षण कर खुद को बेहतर इंसान और प्रभावी प्रशासक बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने शिव खेड़ा के कथन का उल्लेख करते हुए कहा सुनने के लिए सीखो और सीखने के लिए सुनो।

चर्चा में पूर्व मुख्य सचिव श्री आर. परशुराम, पूर्व मुख्य सचिव श्री बीपी सिंह, सेवानिवृत वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्री पी.के दास ने अपने अनुभव साझा किए। वक्ताओं ने युवा अधिकारियों को नैतिक मूल्यों को अपने कार्य में आत्मसात करने और प्रशासनिक निर्णयों में अखंडता बनाए रखने की सलाह दी।

पैनल चर्चा में वक्ताओं ने अधिकारियों से अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक सेवाएं पहुंचाने और साहस के साथ सही मुद्दों के लिए खड़े होने की बात कही। युवा अधिकारियों को अपनी भूमिका को समझते हुए बदलाव लाने के लिए समर्पित कार्य और जुनून के साथ कार्य करना चाहिए।

कार्यक्रम में प्रशासन अकादमी के महानिदेशक श्री जे.एन. कांसोटिया, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री मोहम्मद सुलेमान, एसोसिएशन के पदाधिकारी श्री अनुपम राजन, श्री विवेक पोरवाल सहित भारतीय प्रशासनिक सेवा के वर्तमान एवं सेवानिवृत अधिकारी उपस्थित रहे।

अंतराष्ट्रीय वन मेले में 300 से अधिक आगंतुको ने निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया

मेले में लगभग 30 लाख 50 हजार रूपए के वनोपज एवं हर्बल उत्पाद से निर्मित औषधियों की हुई बिक्री

भोपाल (नप्र)। अंतर्राष्ट्रीय वन मेले के चौथे दिन भी लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और बढ़ते दिनों के साथ साथ लोगों का उत्साह भी बढ़ता जा रहा है। भोपाल और उसके आस पास के हिस्सों से बड़ी तादाद में लगभग 35000 लोगों ने मेले का आंनद लिया। आज मेले में लगभग 30.50 लाख रूपए के वनोपज हर्बल उत्पाद से निर्मित औषधियों की बिक्री हो चुकी है। मेले में स्थापित ओ.पी.डी. में बड़ी संख्या में लगभग 300 से अधिक आगंतुको ने निशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया। ओ. पी. डी. में लगभग 90 आयुर्वेदिक चिकित्सकों तथा अनुभवी वैद्यों द्वारा निःशुल्क परामर्श लिया गया।

मेले में लगे बांस उत्पादों के स्टॉल्स, जिसमे बांस से बने फर्नीचर, घर सजावट के सामान एवं अन्य प्रकार की वस्तुओं को लोग बहुत पसंद कर रहे हैं। लोगों के इस रुझान से बांस के उत्पाद में सम्मिलित वन समितियों को अच्छा खासा प्रोत्साहन मिल रहा है।

दो दिवसीय कार्यशाला (कांफ्रेंस), का तृतीय सत्र से निरन्तर विभिन्न सत्रों में नेपाल, श्रीलंका, यू.एस.ए. के शासकीय संस्थानों के वरिष्ठ वैज्ञानिकों/ अधिकारयों के साथ-साथ केरल, झारखंड, राजस्थान एवं आसाम से पधारे विषय विशेषज्ञों द्वारा लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण आधारित अनुभवों का साझा किया गया। शाम 5ः00 बजे समस्त सत्रों का समापन कर भारतीय वन प्रबंधन संस्थान के प्रोफेसर श्री अद्वैत के द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का सारांश प्रस्तुत किया गया। बैतूल के वनमंडलाधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया। मेला प्रांगण में आज सुबह 11 बजे से रात्रि 10 बजे तक रंगारंग कार्यक्रम चलते रहे। मेले में आयोजित एकल और सामूहिक गायन में कक्षा 01 से 12 तक के लगभग 11 विद्यालयों से 90 से भी अधिक छात्र छात्राओं ने अपनी अद्भुत कला का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया एवं उनकी विलक्षण प्रतिभा को सराहा गया। शाम 5ः00 बजे से 7ः00 बजे तक असलम इब्राहिम शेख ग्रुप द्वारा आर्केस्ट्रा की भव्य प्रस्तुति दी गई।

झांसी मंडल में तीसरी लाइन कार्य, भोपाल मंडल से गुजरने वाली 8 ट्रेनों का मार्ग परिवर्तित

भोपाल। उत्तर मध्य रेलवे के झांसी मंडल के ग्वालियर-झाँसी खंड में तीसरी लाइन के कार्य के संदर्भ में संदलपुर-आंतरी स्टेशनों के बीच अप लाइन पर कट और कनेक्शन कार्य के चलते भोपाल मंडल से गुजरने वाली यात्री गाड़ियों का मार्ग परिवर्तित किया गया है।

1. गाड़ी संख्या 12644 हजरत निज़ामुद्दीन-तिरुवनंतपुरम एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 को अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
2. गाड़ी संख्या 12780 हजरत निज़ामुद्दीन-वास्को डी गामा एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 से 21.12.2024 तक अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
3. गाड़ी संख्या 12626 नई दिल्ली - त्रिवेंद्रम केरला एक्सप्रेस दिनांक 20. 12. 2024 से 21.12.2024 तक अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
4. गाड़ी संख्या 12708 हजरत निज़ामुद्दीन-तिरुपति एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 को अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
5. गाड़ी संख्या 12628 नई दिल्ली - बेंगलुरू कर्नाटक एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 से 21.12.2024 तक अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
6. गाडी संख्या 12808 निज़ामुद्दीन-विशाखापटनम एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 को अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया मथुरा-बयाना-सोगरिया-रुठियाई-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।
7. संख्या 12618 हजरत निजामुद्दीन-एर्नाकुलम एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 से 22.12.2024 तक अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया ग्वालियर-गुना-रुठियाई-मक्सी-भोपाल होते हुए गंतव्य को जाएगी।
8. गाड़ी संख्या 12191 हज़रत निजामुद्दीन-जबलपुर श्रीधाम एक्सप्रेस दिनांक 20.12.2024 से 22.12.2024 तक अपने प्रारंभिक स्टेशन से प्रस्थान कर अपने निर्धारित मार्ग के बजाय परिवर्तित मार्ग वाया ग्वालियर-गुना-बीना होते हुए गंतव्य को जाएगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा ह्ज्ञश्वस/139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी पता करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें।

पश्चिम मध्य रेल से चलने वाली यात्री स्पेशल ट्रेनों की सेवाओं में विस्तार

भोपाल। रेल प्रशासन यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम मध्य रेल से प्रारंभ/टर्मिनेट होने वाली स्पेशल ट्रेनों की सेवाओं की अवधि को आगामी आदेश तक विस्तार करने का निर्णय लिया है, विवरण निम्नानुसार हैं।

जबलपुर-बांद्रा टर्मिनस-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन

ट्रेन संख्या 02134 जबलपुर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 03.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन जबलपुर से गंतव्य स्टेशन बांद्रा टर्मिनस की ओर चलेगी।

ट्रेन संख्या 02133 बांद्रा टर्मिनस-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 04.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन बांद्रा टर्मिनस से गंतव्य की ओर चलेगी।

कोच कंपोजीशन- इस गाड़ी में 01 प्रथम श्रेणी वातानुकूलित कोच, 02 द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 06 तृतीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 11 शयनयान श्रेणी, 02 सामान्य श्रेणी, एवं 02 एसएलआर/डी सहित 24 कोच रहेंगे।

जबलपुर-पुणे-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन

ट्रेन संख्या 02132 जबलपुर-पुणे साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 05.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन जबलपुर से गंतव्य की ओर चलेगी।

ट्रेन संख्या 02131 पुणे-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 06.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन पुणे से गंतव्य की ओर चलेगी।

कोच कंपोजीशन- इस गाड़ी में 02 द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 05 तृतीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 08 शयनयान श्रेणी एवं 02 एसएलआर/डी सहित 17 कोच रहेंगे।

जबलपुर-कोयम्बटूर-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन

ट्रेन संख्या 02198 जबलपुर- कोयम्बटूर साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 03.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन जबलपुर से गंतव्य की ओर चलेगी।

ट्रेन संख्या 02197 कोयम्बटूर-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल, दिनांक 06.01.2025 से आगामी आदेश तक अपने प्रारंभिक स्टेशन पुणे से गंतव्य की ओर चलेगी।

कोच कंपोजीशन- इस गाड़ी में 01 प्रथम श्रेणी वातानुकूलित कोच, 02 द्वितीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 06 तृतीय श्रेणी वातानुकूलित कोच, 11 शयनयान श्रेणी, 02 सामान्य श्रेणी, एवं 02 एसएलआर/डी सहित 24 कोच रहेंगे।

सीएम ने सशस्त्र सीमा बल के स्थापना दिवस पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सशस्त्र सीमा बल के स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सेवा, सुरक्षा, बंधुत्व के ध्येय वाक्य के साथ देश की रक्षा के लिए समर्पित मां भारती के वीर सपूतों को नमन है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सपूतों पर राष्ट्र को गर्व है।

जयपुर की सड़क दुर्घटना पर सीएम ने शोक जताया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राजस्थान के जयपुर में भीषण सड़क दुर्घटना में कई अनमोल जिंदगियों के असमय काल कवलित होने का समाचार हृदय विदारक है। मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिजनों के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगतों की आत्मा को शांति और शोकाकुल परिजनों को असहनीय दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। उन्होंने सभी घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना भी की।

भाजपा विधायक बोले-शाह ने जो कहा, बिल्कुल सही कहा

कांग्रेस विधायक का जवाब- देश में मूर्खों की कमी नहीं ; अंबेडकर पर दिए बयान पर विरोध

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के डॉ. भीमराव अंबेडकर पद दिए गए बयान को लेकर कांग्रेस हमलावर है। वहीं बीजपी भी संसद में गुरुवार को हुई धक्का-मुक्की की घटना को लेकर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ प्रदर्शन कर रही है।मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन विधानसभा में कांग्रेस विधायकों ने अमित शाह के खिलाफ नारेबाजी की। वहीं, बीजेपी विधायकों ने राहुल गांधी मुर्दाबाद के नारे लगाए। इस बीच गुना के बीजेपी विधायक पन्नालाल शाक्य ने अमित शाह के बयान को सही बताया है। विधानसभा सत्र खत्म होने के बाद मीडिया के सवाल पर पन्नालाल शाक्य ने कहा- अमित शाह ने जो कहा वो बिल्कुल सही कहा है। शाक्य के बयान पर कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने कहा कि इस देश में मूर्खों की कमी नहीं है।

सीएमओ को बीस हजार की रिश्वत लेते लोकायुक्त ने पकडा

सतना (नप्र)। नगर पालिका मैहर में विभिन्न कार्यों का बिल पास करने की आवाज में ठेकेदार से 20, 000 की रिश्वत लेते हुए नगर पालिका मैहर के सीएमओ लालजी ताम्रकार को रीवा लोकायुक्त पुलिस ने रंगे हाथ पकड़ लिया है। लोकायुक्त ने उनके विरुद्ध भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर मामले को जांच में लिया है और उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया है।

ठेकेदार से मांगे थे पैसे- ये कार्रवाई सीएमओ के निज निवास मैहर में की गई है। लोकायुक्त कार्यालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार शुक्रवार की सुबह सीएमओ लालजी ताम्रकार के निज निवास पर

ठेकेदार शिवेंद्र सिंह निवासी उचेहरा जिला सतना के उपस्थिति में उक्त कार्रवाई की गई है। ठेकेदार शिवेंद्र सिंह नेगेट दोनों लोकायुक्त कार्यालय में शिकायत दर्ज कराई थी।

तीस हजार रुपए रिश्वत की मांग- नगर पालिका मैहर के सीएमओ लालजी ताम्रकार द्वारा उनके द्वारा किए गए काम का बिल पास करने के लिए तीस हजार रुपए रिश्वत की मांग कर रहे हैं। उक्त मामले में ठेकेदार द्वारा पूर्व में 10000 उन्हें दिए जा चुके हैं। शिकायत की जांच करने पर पता चला कि अभी भी लालजी टपका द्वारा 20000 रुपए की रिश्वत की मां की जा रही है।

जमानत पर किया रिहा- शुक्रवार को लोकायुक्त टीम ने 16 सदस्य टीम के साथ उक्त कार्रवाई करते हुए लालजी ताम्रकार को रंगे हाथ पकड़ लिया, उनके विरुद्ध भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला पंजीबद्ध कर उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया है। लोकायुक्त में मामला दर्ज कर मामले को विवेचना में लिया है।

हाईकोर्ट की सख्ती, नर्सिंग काउंसिल के चेयरमैन और रजिस्ट्रार नपे

सरियाम नए चेयरमैन, कृष्ण कुमार रजिस्ट्रार बने

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश सरकार ने शुक्रवार को नर्सिंग काउंसिल के चेयरमैन डॉ. जितेन चंद्र शुक्ला और रजिस्ट्रार अनीता चांद को पद से हटा दिया है। हाईकोर्ट के निर्देश पर सरकार ने ये कार्रवाई की है।दरअसल, गुरुवार को सुनवाई में हाईकोर्ट ने बहुचर्चित नर्सिंग कॉलेज फर्जीवाड़े मामले को लेकर राज्य सरकार पर नाराजगी जताई थी। कोर्ट ने निर्देश दिए थे कि 24 घंटे के भीतर आदेश का पालन करते हुए नर्सिंग काउंसिल के चेयरमैन डॉ. जितेन चंद्र शुक्ला और रजिस्ट्रार अनीता चांद को पद से हटाया जाए।सरकार ने मनोज सरियाम को नर्सिंग काउंसिल का चेयरमैन और कृष्ण कुमार रावत को रजिस्ट्रार का अतिरिक्त प्रभार दिया है, हालांकि इसकी घोषणा होना बाकी है।

अपात्र कॉलेज को बताया था सूटेबल- हाईकोर्ट में जनहित याचिका लगाने वाले वकील विशाल बघेल ने बताया था कि 2021-22 में भोपाल के आरकेएस कॉलेज को अपात्र होने के बावजूद भी तत्कालीन इंस्पेक्टर अनीता चांद ने सूटेबल बताया था। याचिका में आरोप लगाया कि रिपोर्ट दिखाकर कॉलेज को मान्यता दिलवाने में सहायता करने वाली अनीता चांद को गड़बड़ी पर कार्रवाई के बजाय पुरस्कृत करते हुए नर्सिंग कार्उंसिल का रजिस्ट्रार बना दिया था।

हाईकोर्ट ने नर्सिंग कार्उंसिल के चेयरमैन डॉ. जितेन चंद्र शुक्ला और रजिस्ट्रार अनीता चांद को पद से हटाने के निर्देश दिए थे।

दरअसल, नर्सिंग फर्जीवाड़ा मामले में ला स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विशाल बघेल की जनहित याचिका के साथ सभी मामलों पर सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता की ओर से हाईकोर्ट में आवेदन पेश कर बताया गया कि हाईकोर्ट ने 12 दिसंबर को नर्सिंग काउंसिल के चेयरमैन और रजिस्ट्रार को तत्काल हटाने के निर्देश दिए थे, उस आदेश का पालन नहीं करते हुए मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव ने दोषी अधिकारियों को संरक्षण दिया हैं।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, जनता के जीवन में सकारात्मक बदलाव और व्यवस्थाओं को सुव्यवस्था में बदलने में सक्षमः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

● विश्व में देश की विशिष्ट पहचान बनाने में आईएएस अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका ● सर्विस मीट का विचार मंथन नए दौर के नए मध्यप्रदेश के निर्माण में सहायक ● मुख्यमंत्री ने म.प्र. आईएएस एसोसिएशन के सिविल सर्विस मीट -2024 का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारत जैसे विशाल और विविधताओं वाले देश की विश्व में विशिष्ट छवि बनाने में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज भारत की अलग पहचान बनी है और देश को आदर-सम्मान के साथ देखा जाता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा का स्वरूप अन्य सेवाओं से भिन्न है। कठोर परिश्रम के साथ-साथ ईश्वर प्रदत्त भाग्य से ही मनुष्य को भारतीय प्रशासनिक सेवा से जन सेवा का अवसर प्राप्त होता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश आईएएस ऑफिसर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित सिविल सर्विस मीट-2024 का प्रशासन अकादमी में शुभारंभ कर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अंगवास्त्रम् भेंट कर स्वागत किया गया। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

दक्षता से लिए गए निर्णयों से ही अधिकारी इतिहास बनाते हैं- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पौराणिक संदर्भ का उल्लेख करते हुए कहा कि ईश्वर प्रदत्त यश का सदुपयोग जनहित में करना ही श्रेष्ठतम है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने और व्यवस्थाओं को सुव्यवस्था में बदलने में सक्षम हैं। व्यक्तिगत स्तर पर की गई ऐसी पहल, सुख और संतोष प्रदान करती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार बेहतर अवसरों के साथ अपनी दक्षता और सूझ-बूझ से लिए गए निर्णय और उनके बेहतर क्रियान्वयन से ही अधिकारी इतिहास बनाते हैं।

सेवाकाल के बाद भी देश की उन्नति और जनकल्याण में दें योगदान- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिविल सर्विस मीट का विचार मंथन नए दौर के नए मध्यप्रदेश के निर्माण में सहायक होगा। प्रशासनिक अधिकारियों के लंबे अनुभवों को साझा करने के लिए किसी संस्था की संरचना करने पर विचार होना चाहिए। इससे अलग-अलग क्षेत्र के व्यक्तियों के साथ विचारों के आदान-प्रदान तथा सेवाकाल के बाद भी देश की उन्नति और जन कल्याण में अपना योगदान देने के लिए मंच उपलब्ध हो सकेगा। वैश्विक परिदृश्य में हो रही घटनाओं की दृष्टि से भारत का वर्तमान समय बहुत अनुकूल और सकारात्मक है। पड़ौसी देशों में हो रहे घटनाक्रम से इसका आंकलन किया जा सकता है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत की व्यवस्थाएं विश्व में आदर्श प्रस्तुत कर रही हैं। इसमें भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का योगदान महत्वपूर्ण है।

निर्णयों के क्रियान्वयन में आईएएस अधिकारियों की दक्षता प्रशंसनीय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि व्यवस्था संचालन में विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका के अलग-अलग दायित्व हैं। उनके निर्वहन की अपनी-अपनी विशेषज्ञता भी है। इन सभी संस्थाओं ने लोकतंत्र को बनाए रखने में अपने-अपने स्तर पर योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि निर्णय लेना या एक विचार देना सरल है, लेकिन बड़े फलक पर उसका क्रियान्वयन चुनौती पूर्ण होता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की निर्णयों के क्रियान्वयन में दक्षता प्रशंसनीय है।

सर्विस मीट, टीम भावना विकसित करने और नवाचारों को जानने व सीखने में सहायक

एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री मोहम्मद सुलेमान ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव से परिवार के मुखिया के रूप में सदैव मार्गदर्शन प्राप्त होता है। तीन दिवसीय सर्विस मीट से एसोसिएशन के सदस्यों में टीम भावना विकसित करने, नवाचारों को जानने और सीखने तथा बेहतर परिणाम देने के लिए स्वयं को तैयार करने का अवसर प्राप्त होता है।

जी-20 इंडिया के शेरपा तथा नीति आयोग के पूर्व अध्यक्ष अमिताभ कांत रहे उपस्थित

कार्यक्रम में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, जी-20 इंडिया के शेरपा तथा नीति आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री अमिताभ कांत, प्रशासन अकादमी के महानिदेशक श्री जे.एन. कंसोटिया, एसोसिएशन के पदाधिकारी श्री अनुपम राजन, श्री विवेक अग्रवाल सहित भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी उपस्थित थे।

विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

अंबेडकर-राहुल गांधी पर बीजेपी-कांग्रेस में टकराव ; राष्ट्रगान के बिना सत्र समाप्ति पर विपक्ष का ऐतराज

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई है। इससे पहले शीतकालीन सत्र में शून्य काल के दौरान बीजेपी विधायक सीतासरन शर्मा ने राहुल गांधी पर संसद में धक्का-मुक्की का आरोप लगाया। इस पर कांग्रेस ने कहा- जो व्यक्ति सदन का सदस्य नहीं है, उसका मामला यहां कैसे उठाया जा रहा है। राहुल गांधी को बदनाम किया जा रहा है लेकिन बीजेपी नेताओं ने अंबेडकर जी का जो अपमान किया, उस पर सरकार मौन है।

कांग्रेस के विधायकों ने सदन में नीले गमछे लहराए। दोनों ओर से शोर-शराबे और हंगामे के चलते स्पीकर ने कार्यवाही स्थगित कर दी। कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने कहा- सत्र की समाप्ति के पहले राष्ट्रगान नहीं हुआ। ये सदन का अपमान है।

संविधान की कॉपी लेकर पहुंचे थे कांग्रेस विधायक- सत्र में हिस्सा लेने के लिए कांग्रेस विधायक आज सुबह संविधान की प्रतियां लेकर विधानसभा पहुंचे थे। वे तीन दिन पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की संसद में डॉ. भीमराव अंबेडकर पर की गई टिप्पणी का विरोध जता रहे थे।

नेत प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- बीजेपी द्वारा संविधान का अपमान किया जा रहा है। संविधान निर्माता अंबेडकर जी के बारे में गलत शब्द कहे गए। मोदी और शाह ने अभी तक माफी नहीं मांगी। राहुल गांधी और खड़गे जी जब इस बारे में बात कर रहे थे तो बीजेपी सांसदों ने धक्का-मुक्की की। उन पर झूठा केस लगाया। हमारी मांग है कि टिप्पणी के लिए शाह माफी मांगें और राहुल जी पर दर्ज झूठा प्रकरण वापस लिया जाए।

कांग्रेस विधायक विक्रांत भूरिया ने सरकारी हॉस्टल में दो छात्रों की मौत का मुद्दा उठाया। बोले कि मामले में अधिकारी गलत जवाब दे रहे हैं।

धार विधायक नीना वर्मा ने पूछा- स्कूलों के अपग्रेडेशन की कोई योजना है क्या? इस पर मंत्री विजय शाह ने कहा- इस सत्र में ऐसी कोई योजना नहीं है।

पिपरिया विधायक ठाकुरदास नागवंशी ने कहा-जल जीवन मिशन के काम की क्वालिटी ठीक नहीं है। ठेकेदारों के खिलाफ कार्रवाई करें।

बीजेपी विधायक व पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव ने कहा- जल जीवन मिशन का निष्पक्ष रूप से ऑडिट कराया जाए कि वर्तमान में स्थिति क्या है? कई योजनाएं जो 2 साल में पूरी होनी थीं, 5 साल होने के बाद भी कंपलीट नहीं हुईं।

जबलपुर व्हाया बुधनी-हरदा रेल लाइन को देवास के संदलपुर तक जोड़ने, गुना-अशोकनगर-ललितपुर-टीकमगढ़-छतरपुर मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित करने के अशासकीय संकल्प पारित। केंद्र को भेजे जाएंगे।

उपमुख्यमंत्री बोले- सत्र से सभी विधायक संतुष्ट - उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा- शीतकालीन सत्र से सभी विधायक संतुष्ट हैं। सभी ने पांच दिन के इस सत्र में अपने क्षेत्र और जनता की समस्याओं के समाधान के लिए विधानसभा के फ्लोर का सदुपयोग किया है। अनुपूरक बजट में उन सभी चीजों को कुशलता के साथ शामिल किया गया है, जो मध्यप्रदेश के विकास को गति देने के लिए आवश्यक हैं।

मंत्री ने कहा- हंगामे में राष्ट्रगान का अपमान होता- मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा- विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है। विपक्ष इतना हंगामा कर रहा था। ऐसे में राष्ट्रगान नहीं होता, उसका अपमान होता है।

मालवीय बोले- सदन में गमछे लहराना कांग्रेस की ओछी हरकत- घट्टिया विधायक सतीश मालवीय बोले- विधानसभा में कभी भी ऐसी घटना नहीं हुई है। सदन में गमछे लहराना कांग्रेस की ओछी हरकत है।सदन की अपनी मर्यादा है। विधानसभा की कार्यवाही संविधान के हिसाब से चलती है। इसकी गरिमा बनाए रखना चाहिए।

आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल के यहां मिली सौ किलो से अधिक चांदी

सौरभ के भोपाल स्थित घर पर रात 12.30 बजे तक चली कार्रवाई, 3 करोड़ कैश भी बरामद

भोपाल (नप्र)। भोपाल की ई-7 अरेरा कॉलोनी में स्थित पूर्व आरटीओ (रीजनल ट्रांसपोर्ट ऑफिस) कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा के बंगले पर लोकायुक्त की टीम ने गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात 12.30 बजे तक कार्रवाई की। इस दौरान पुलिस को नोट गिनने की सात मशीन, सूत्रों के अनुसार कुल 2.95 करोड़ कैश, दो क्विंटल चांदी की सिल्ली, दस किलो चांदी के जेवरात और पचास लाख रुपए का सोना मिला है।

इसी के साथ दो कारें, एक स्कूल एक निर्माणाधीन बंगला, लग्जरी लाइफ स्टाइल का करीब दो करोड़ रुपए कीमत का सामान भी घर में मिला है। जिसमें महंगे कपड़े, कीमती झूमर और धातु की मूर्तियां शामिल हैं। आरोपी के ऑफिस से भोपाल, इंदौर और ग्वालियर सहित कई शहरों में प्रॉपर्टी के दस्तावेज, एग्रीमेंट मिले हैं। अब तक आरोपी के तीन बैंक अकाउंट की जानकारी लोकायुक्त टीम को मिली है। इनमें कितना कैश है, इसकी जानकारी जुटाई जाएगी। सौरभ फिलहाल भोपाल में नहीं हैं। कार्रवाई से पहले ही वह दुबई में था। बता दें कि लोकायुक्त टीम ने गुरुवार सुबह यह कार्रवाई की थी। सौरभ के घर से 1.25 करोड़ रुपए कैश, आधा किलो सोना, हीरे और सोने के करीब 50 लाख रुपए के जेवरात और चांदी की सिल्लियां सहित प्रॉपर्टी के दस्तावेज मिले। ऑफिस से 1.70 करोड़ रुपए कैश मिले। सौरभ शर्मा परिवहन विभाग (आरटीओ) में आरक्षक रहे हैं। एक साल पहले वीआरएस ले चुके हैं। फिलहाल, रियल एस्टेट कारोबार से जुड़े हैं। उनके एक होटल पर भी सर्चिंग गई है। सौरभ ने महज 7 साल की नौकरी में प्रदेश भर में करोड़ों का अवैध साम्राज्य खड़ा किया है।

घर के इंटीरियर पर खर्च किए दो करोड़ रुपए- सौरभ के घर में कीमती सैनिटरी, झूमर, होम डेकोर का लग्जरी सामान मिला था। इंटीरियर डिजाइनिंग में करीब दो करोड़ रुपए खर्च किए हैं। लोकायुक्त की टीम को उसके घर से चांदी की सिल्लियां मिली है।

विवि- शिक्षक देश और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए युवा पीढ़ी को करें तैयार : राज्यपाल पटेल

युवाओं के कौशल विकास और स्पष्ट मार्गदर्शन के साथ ही विश्वविद्यालयों को बनाएंगे आत्मनिर्भर : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महू में डॉ. बी आर अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया

भोपाल/महू (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए समरस, समावेशी राष्ट्र के संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को नमन करते हुए कहा कि बाबा साहेब ने अपनी अद्भुत दूरदृष्टि से हमें संविधान के रूप में जाति, लिंग, भाषा, धर्म, धन और शक्ति बल आदि के भेदभावों से मुक्त समावेशी, समरस समाज की धरोहर सौंपी है। राज्यपाल श्री पटेल शुक्रवार को महू में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के 6वें दीक्षांत समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन दे रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलाधिपति डॉ. प्रकाश सी बरतूनिया, विधायक सुश्री उषा ठाकुर उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि हमारा संविधान प्रेरणादायक जीवंत दस्तावेज और स्वतंत्र भारत का आधुनिक धर्म ग्रंथ है, जिसका समर्पित भाव से पालन, हर भारतीय का परम कर्तव्य है। विद्यार्थियों का दायित्व है कि संविधान का अपने आचरण, व्यवहार में समर्थन और संरक्षण करें। समाज के तुलनात्मक रूप से वंचित, पिछड़े वर्गों, समुदायों के भाई बहनों के विकास की जवाबदारी, जिम्मेदारी के साथ स्वीकार करें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने बाबा साहेब के सपनों के अनुरूप राष्ट्र निर्माण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा शिक्षण संस्थानों को ऐसे नागरिकों को तैयार करने का अवसर दिया है। यह जरूरी है कि विश्वविद्यालय और शिक्षक, हमारी संस्कृति के अनुरूप देश और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक समृद्धि और समानता के प्रति समर्पित युवा ध्वज वाहक तैयार करें।

राज्यपाल ने शिक्षकों से अनुरोध किया कि शिक्षण प्रणाली को वह विद्यार्थियों की उद्यमिता को बढ़ावा देने, नवाचार की प्रेरणा देने, चिंतन, नेतृत्व के गुणों के साथ सामाजिक सरोकारों में सहभागिता के संस्कार प्रदान करने वाली बनाएं। युवा ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है, देश जब आजादी की 100वीं सालगिरह मनाएगा, देश का नेतृत्व युवा कर रहे होंगे, उस समय विकसित भारत का स्वरूप कैसा हो उसके लिए युवाओं को आज से ही कार्य करना होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि बाबा साहेब अंबेडकर ने विपरीत परिस्थितियों में शिक्षा दीक्षा ग्रहण करने को गौरव की बात बताते हुए अनुकरणीय बताया। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने जो सीखा, वो समाज को समर्पित किया। देश का संविधान इस बात का प्रमाण है जिसमें भारत की विविधता भरी संस्कृति, जनजाति नागरिक आदि को एक साथ जोड़ा गया है। बाबा साहेब ने चित्रों के संयोजन से संविधान को गौरवान्वित किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री रहने के दौरान इस विश्वविद्यालय में कई संकाय शुरू किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जरूरत के मुताबिक और नए संकाय खोले जाएँगे। जनवरी माह में राज्यपाल की अध्यक्षता में कुलगुरूओं की बैठक में इस पर निर्णय लिए जाने का मुख्यमंत्री ने भरोसा जताया। उन्होंने कहा कि युवाओं के कौशल विकास और स्पष्ट दिशा देने के साथ ही विश्वविद्यालय की आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास किए जाएँगे। मुख्यमंत्री ने दीक्षांत समारोह के माध्यम से विद्यार्थियों को उपाधि देने के सिलसिले को आरम्भ करने में राज्यपाल की पहल का अभिनंदन भी किया।

समारोह को सारस्वत अतिथि श्री बरतूनिया ने भी संबोधित किया- दीक्षांत समारोह में संस्थान के 16 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। अम्डेकर विश्वविद्यालय के द्वारा विगत 5 वर्षों में 100 से अधिक शोधार्थियों ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है।